

“प्रथम गुच्छ”

मोहन-मोहिनी

बालविवाह कुरीति विषयक उपदेशप्रद

मनोरंजक ३ अङ्की नाटक ।

—

लेखक और प्रकाशक—

पं० चतुर्वेदी कन्हैयालालात्मज

लाहरीनारायण क० चतुर्वेदी

(रामपुरी हो० स्टेट निवासी)

इंटरमास्टर “श्री गोदावन स्कूल”

हिन्दा शिष्यापक “श्री गादायत जी गुरुकुल”

पोष्ट-बोटी सादरी । (मेवाड)


—

पथमावृत्ति
१०००


} स० १६=६ वि० }

मूल्य
॥

(सर्वाधिकार रक्षित)



पंडित—चूगमणि चतुर्वेदी क प्रबन्ध से
"भावन प्रेस" इटावा में छपी।





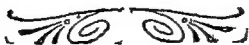
मेरे मित्र पंडित जहमी गायण चतुर्वेदी जी ने यह गीत
 'भूमिका लिखने के लिये भेजा था'। मैं इन यात्रों में ही कि
 कुछ लिख सकूँ। किंतु यह गीत बड़ा ही गंभीर है। भारत
 का अन्न पत्तन बाल और वृद्ध विवाह द्वारा ही दुष्ट है और उस
 का उद्धार भी इन दोनों दुर्गुणों के नाश ही हो सकता है।
 'चतुर्वेदी जी ने बाल और वृद्ध विवाह के चित्र बड़े ही स्पष्ट
 दिखलाये हैं और वे इतने हृदयस्पर्शी हैं कि गीत के पढ़ने
 वाला तथा वृद्ध बालों का हृदय एक वेर तो अश्रुयही दहल
 उठेगा यदि यह गीत खेला जायगा तो यह बड़ा ही परिणाम-
 कारक होगा।

आशा है कि भारत के तरुण पीढ़ी के लोग इस गीत को
 अत्यंत करुण चतुर्वेदी जी का उत्साहित करके, उनसे इस स
 भी अधिक उपयोग कार्य समाज तथा साहित्य के लिये लेंगे।

उज्जैन ।
 १६-८-२६ ई०

}

दिनकर गंगाधर गारे
 बा० प० ।



४ श्रीद्वि ६

“मेरा वक्तव्य”



प्रिय पाठक ! आज मैं कुछ वक्तव्य पढ़िने में एक सामाजिक
'कमल-गंगा' नामक गद्यक लिखा प्रारम्भ किया था किंतु
बहुत बड़े अविवाय कारणों से शून्य हो गया है। यह किंतु
विदित था कि उसका प्रकाशन होना न प्रथम ही काइ अन्य
पुस्तक आकर कम-कमला में पहुँचेगा। अस्तु—

मस्तुन पुस्तक लिखा था यह कारण वर्णित हुआ कि
'गंगा माघकृष्ण समाप्त' स० १९८४ त० २२ जायरा सन्
१९०८ वर्ष ३ मध्या २५ क तत्समय क कलकत्ते में प्रकाशित
प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'आर्य-सन्देश' में (सामान्य समय
में उक्त पत्र काशी से प्रकाशित होता है) “गंगा उपहार”

नामक शीर्षक से एक सूचना भी पाई जायाकरलात जा पत्नी
क हस्ताक्षर युक्त इस आशय का सुनी कि 'बाल विवाह से
हारि' इस विषय पर एक सुन्दर पत्रिका गद्यक लिखा जाने
गयाशय का वर्ष भर 'श्रीकृष्ण सन्देश' तथा कुछ पुस्तकें उप-
हारस्वरूप दी जायगा। सर्वोत्तम लक्ष्य है इसका निर्णय
'आर्य सन्देश' का सम्पादक मण्डल करेंगे आदि।

इस समय मैंने भा. शास्त्रना में उल्लिखित विषय पर 'माहन मोहनी' नामक एकांकी नाटक लिखकर 'कलकत्ते' भेज दिया। कुछ माह के पश्चात् भामान् जवाहरलाल जी काका का एक पत्र प्राप्त हुआ उसमें उन्होंने लिखा 'कि 'बाल विवाहसे हानि' इस विषय पर जितना नाटक आये उतना सबों में आगकी कृति' पसन्द की गई है, निश्चित पुरस्कार आपका मिल जायगा' आदि।

प्रथम उल्लिखित नाटक एकांकी ही लिखा गया था तत्पश्चात् चर्ची तीव्र अंकी कर दिया है, कुछ स्यानों-पर साया आदि भी नूतन रूप दिये गये हैं। इसमें आशा है कि आप लोगों की अभिरुचि का वृद्धि के साथ ही नाटक का सौन्दर्य वृद्धि भी होगा।

नाटकके नायक "मोहन" और नायिका "मोहिनी" का परस्पर विवाह बाल्यावस्था में ही होता है। विवाह के प्रथम का दृष्ट पुष्ट खलिष्ठ, मेधावी और महत्वाकांक्षी मोहन, विवाह के कुछ वर्षों बाद ही अशक्त, रोगी और प्रतिमाहान होता है। कारण दाम्पत्य प्रेम में न्यूनता आती है। ससार सुख सान्नुत्य हो जाता है। मोहिनी का हार्दिक भाव निज बगीचे में लक्ष्मण अपने पिता के घर डाकटों की सम्मति से भेज दा जानी है उस समय सहोदर का सम्मुख प्रकट होने हैं। कुछ समय पहिले दुःख युवका के कपटगाश में फैलने के अन्तर से ही सनीत्य रहा तो अंशु हो जाता है किंतु

लाक-कज्जा तथा कुल बल्लभ के भय से आत्म हत्या कर लेनी है ।
 धामारा अभाष्य हो जागे मोहन भी प्राण त्याग करता है ।

मतात्व गत्ता के महत्व का दृष्टि में रखने के कारण इस
 प्रकार का दुःखद और भीषण घटना घटानी पड़ी है । साम्प्रत
 समय में तो इस प्रकार की दुःखिनी अवलोक्यें कुरीतियों द्वारा
 सताइ जाकर कुटु को छोड़ अधिक सख्या में गुरु-यन्त्रणायें
 भोग जीवायाया करना है । बाल विवाह से क्या हागियाँ
 हाता हैं वे छोटे शब्दा में इस प्रकार हैं -इन्को-द्वारा बाजक
 बालिकायें निश्चय, निर्धन्य अशक्त हो जाती हैं । कई प्रकार का
 अस्वास्थ्य रोग उनके शरीर में प्रवेश कर उन्हें हतवीर्य कर डाल
 का सर्वनाश कर देते हैं । बालिका पत्नियाँ शास्त्र की विधवायें
 होजाती हैं । ऐसा स्थिति में वे बाल हत्या, भ्रूणहत्या करें,
 सुनतमाग, इत्यादि विधर्मों धन अपने देगों कुत्तों को कलक
 लगायें, लालों का सख्या में बेच्यारें बनें और शहरों में काँठों
 को आवाद कर देशवासियों का नतमस्तक होनाको बाध्य कर,
 कुरीतियों के भीषण परिणाम का दृष्टान्त मतावे तो इसमें कोई
 आश्चर्य की बात नहीं उगका विशेष दाम्प नहीं । पूर्ण दोष तो
 है उक्त उक्त पातकों का जो कि विवेक शून्य हो गिज अशोध
 बालिकाओं को कुगति की बलि बदी पर आत्म मूर्तकर बलि-
 दान कर देते हैं । हा ! शोक ! शोक ! महाशोक !!

अब हम विभाजित अंक इसलिये लिखे देते हैं कि भारत
 की सामाजिक दशा अन्य देशों के मुकाबले में कैसी है ?

आशा है कि सिग्धनरवाचक ' साम्प्रत समय की परिस्थिति का मनायागपूर्वक मंगन करेंगे ।

। हमारे देश भारतवर्ष में, सन् १९२१ ई० की मनुष्यगणना के अनुसार पुरुषों की कुल संख्या १६३६६५५५४ और स्त्रियों की संख्या कुल १५४६४६६२६, दोनों मिला कर कुल ३१८६४२४० है ।

सन् १९११ की मनुष्य गणना (All India census report 1911) के अनुसार बाल, पालिका और बाल विधवाये उनकी आयु सहित इस प्रकार थीं ।

| वर्ष आयु | बाल पत्नी | बाल विधवाये |
|----------------|-----------|-------------|
| ० से १ वर्ष तक | १३२१२ | १०१४ |
| १ से २ " | १७७५३ | ८५६ |
| २ से ३ " | ४६७८७ | १८०७ |
| ३ से ४ " | ८७५०८ | ४७५३ |
| ४ से ५ " | १३४१०५ | ६२७३ |
| ५ से १० " | २२१६७७८ | १४२७० |
| १० से १५ " | ६५५५४२४ | २०३०४२ |

नोट—इस सन् में सब मिला कर सब आयु की कुल विधवाये २६४२१२६२ थीं । मनुष्यों की औसत आयु अंगरेजों की ४० वर्ष और भारतीयों की २३ वर्ष थी । १००० में से ३३३ वधवे १ वर्ष की आयु में ही मर जाते थे ।

१० हजार में सन् १९०१ का गणना के अनुसार पिये
 वाय ० स ५ वर्ष तक की, ७५ स १० वर्ष तक की ४० १०
 स १५ वर्ष तक की १६ =। गट—इंग्लैण्ड और वेल्स में २०
 वर्ष तक की आयु का साइ स्थिति नहीं है। यहा २१ स ६५
 वर्ष या इससे ऊपर का पिछवाओं की औसत (कुल) हजार
 गल्ल ७३० और हमारे यहा १७५ है। पुरुष की औसत आयु
 २४ = और स्त्रिया का २४ ७ है।

बाल विवाह आदि कुसुतियों में बच्चे कितना अधिक मरते
 हैं इस पर कुछ ध्यान लाजिये।

सन् १९०१ की मनुष्यगणना के अनुसार जितना बच्चे
 प्रतिवर्ष मरते हैं उनमें से सैकड़ा ४० के लगभग तो जन्म के
 प्रथम में मरता है और सैकड़ा ६० प्रथम मास के अन्दर ही
 मर जाते हैं।

अन्य देशों के मुकाबिल में हमारे यहा के बालकों की मृत्यु
 सका कितना अधिक है। दलिय —

इंग्लैण्ड में हर साल जितना बच्चे पैदा होते हैं उा में
 सैकड़ा सात, फ्रान्स में सैकड़ा ८, जर्मनी में १० फी सदा
 इटली में १६ फी सदा, जापान में १६ फी सदा और यहाँ
 (भारत में) २० फी सदी मर जाते हैं।

मनुष्य भी यहाँ एक हजार की आबादा में ३८ पैदा होते
 हैं और ३५ बाल बाल के माल में समा जाते हैं।

हमारा तो यहा निश्चय है कि इस मापण होस के कुछ अन्य

कारण होने हुये भा मुख्य कारण यह नाशकारी "बालविवाह" है। बाल विवाह की गच्छना कर निम्नांकित विधान इनके विषय में क्या कहते हैं वह भा जग अलोकन करिये।

(१) "पशु जगत में काह पशु घिना सर्वाङ्ग पुष्ट हुये बच्चा नहीं देता। मनुष्य जगत क अङ्गों की पुष्टी क लिये २५ वर्ष स अधिक समय चाहिये। अनपुत्र इन अवस्था क पूर्व हा गर्भाधान करना पशुआ स भी हीन कार्य करना है। ऐसा करना केवल निन्दनीय है बल्कि अति हागिकारक भा है। ('Indu madhwar mallick M A, B L ' ६० ६०)

(२) इतिहासकार 'टालमार्ट्स हॉलर' लिखते हैं कि जब तक भारतवर्षा छारी २ बालिकाओं का विवाह छारे २ बालिका स करत रहेंगे, तब तक उन्की सन्तान छोटे बच्चा-स अधिक अच्छा दशा म करी न पहुँच सकरी। स्वाध्या-नन और स्वराज्य आन्दोलन में वे निस्तेज और बलहीन सिद्ध होंगे और राजकाज उन्नति का उपयोग करने क लिये वे किसी भा प्रकार का शिक्षा स समर्थ नहीं हों सकेंगे। हममें सन्देह नहीं कि शिक्षा क प्रभाव से उन्की बुद्धि में सम्पत्ति आ जायगा और वे किसी सम्भीरन या मोठ मनुष्य क समान बात करने लगेंगे परन्तु सब कुछ होने लूये भा उन्का आचरण अप्रदाय बालकों हा क समान बसा रहेगा।" (६०-६०)

(३) × × × × - "बाल विवाह की कुप्रथा नवनि भारत के लिय अत्यन्त कल्लास्पद है इसका निर्मूल कर्ना भारत सन्ताप का सब से प्रथम और मद्दान कर्त्तव्य है ।"

(Wake up India by Dr Annie Besant ८० ८०)

(४) प्राफेसर काथ-कॉन्ग्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया जिस्द १ पृष्ठ ८८ स १०६ में अन्ध बड़ बाता क साथ यह भी लिखत है कि-"श्रुत्यद् म एक स अधिक एनियों का उत्पन्न नहीं । बाल विवाह का भी काइ यर्णी नहीं । घर और क या दोनों अपा इच्छा स विवाह कर सकते थे ।"

(५) यूनायिड फलर्नी मृगम्भाजीज १ (ancient India) में ऐना लिखा है कि-"महाराजा चन्द्रगुप्त मौर्य सम्राट् क समय में बालविवाह नहीं हाते थे " ;

अब ग्हा'इन विषय का धार्मिक प्रश्न ना हग सम्भृत साहित्य एक धार्मिक विषये क बाइ उद्गुगट विद्वान नहीं । हा आ बुद्ध पुस्तकायत्ताका और विद्वाना क सम्मग से अनुसर आता है उस गर स बुद्ध प्रकाश डाला का प्रतीत करेंगे । हम एक प्रथम यह सूचित कर दे ॥ आचक्षक समभन ॥ कि वैयक्तिक रूप स हम सानाधर्माउलम्बा है । इन धर्म पर उतगा हा उरुष्ट प्रम है जितना कि एक सच्च आस्तिक मना-मनधर्मी का हाता चाहिये । किन्तु इसके साथ हा हमारा यह भा सिद्धांत है कि "अत्ये मनुष्य का अपने स्वतन्त्र दार्दि क विचार प्रकट करन का जग सद्ध अधिकार है ।" सम्भव

है कि निर्माद्वित युनि विवाह अनुमोदक' सस्कृत धार्मिक ग्रन्थों के बचनों के सम्बन्ध में हमारा धारणा भ्रम मूलक ॥ । यदि हमका निर्मा काइ सम्स्कृतज्ञ महानुभाव' कर्ण का कृपा कर बाधित करेंगे तो हम मुमुक्षुभाव में उनकी शुभ सभाति का सादर स्वागत करण के हेतु हृदय से वक्ष्य करेंगे तथा पुस्तक की छिनियावृत्ति में—यदि हागा ता—उस का उल्लेख भी सहर्ष कर देंगे । अस्तु—

हमारे एक विद्वान् मित्र ने एक बार कहा था कि हिन्दू धर्म शास्त्र कल्पवृक्ष और कामधेनु के समान हैं जिन में कि अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों ही मन रूपी फल आयास ही उपलब्ध हो सकते हैं । हम नहीं कह सकते कि यह अतिशयान्ति है अथवा सन्न है । हाँ विषयान्तर के हेतु क्षमा ॥ देविये अष्टांग हृदय के वर्त्ता भी वाग्भट्ट क्या कहते हैं कि—

(१) श्लोक—“पूर्ण पादय वर्षा आ पूर्ण विंशेन सगता ।

शुद्धे गभाशये मार्गे रक्ते शुक्लेऽनल हृदि ॥

वायवतम् सुत सूते तताभ्यूगद्वया पुत्र ॥

रागात्पायु रधान्यावा गर्भो भवति नैऋत्या ॥”

श्लोकार्थ—अर्थात् १६ वर्ष की स्त्री हा व पूर्ण २० वर्ष का पति हा, उक्त शुद्ध गभ से शुद्धबीज का सम्बन्ध होने से वीर्यवान् पुत्र का जन्म हागा । उसमें कम में सम्मोग करण से गर्भा य अल्पायु व निर्धन पुत्रता जन्म हागा अथवा गर्भदा न रहेगा ।

(२) “विर्वा बालि पृथुष्टक या देवाभिर्मान सन्ता ।

ह्रस्वह्रस्वमाह्न प्रजां ददां दिदिद्दिता ॥ अथर्ववेद ३४ १० ॥

अथ—अर्थात् हे कुमारिया ! तुम ब्रह्मन्व घन का पूर्णतया पालन करके माग उपयोगी विद्याओंका सीध करायपी इच्छा—
मुबार और अपनी पगला से उत्तम वर्ग का अपना पति चुनो
और उक्त साथ २ आनन्द पूर्वक गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर
उत्तम प्रजा को उत्पन्न करा । (य० मा० दे० ६०)

(३) “ब्रह्मचर्येण बभूवुर्गान् चिन्दते पतिम् ।

आङ्मान् ब्रह्मचर्येणाश्वा घान् जिर्गापति ॥

(अथर्ववेद कंडि ११-१८ सूत्र ५)

अर्थात्—जब वह बभूव ब्रह्मचर्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ
चुन तब अपना युवावस्था में पूर्ण युवा पुरुष का अपना पति
करे, इसा प्रकार पुरुष या सुशाल धर्मात्मा पत्नी के साथ प्रस-
न्नता से विवाह करके दाता गस्तर सुख दुःख में महायहास
हो । क्योंकि आङ्मान् अर्थात् पशु भी जो पूर्ण जवाना पर्यन्त
ब्रह्मचर्य अर्थात् सुनिगम में रक्खा जाय ता गत्यन्तः बलवान्
होकर विर्यवान् जायों का जीवन जना है ।

(४) “ऋतुमता च गणिका नौ प्रगच्छेत्त गणिनाम् ॥

[गृहा मन्त्रहे श्लाक १७]

अर्थ—ऋतुमती बभूव अर्थात्मा है और ऋतुओं के पश्चात्
विवाह करे ।

(५) “गिना ऋतून् स्व पुण्याश्च गणये दाहित सुधी ॥

(सङ्कार कौस्तुभे पृष्ठ २१)

अर्थ-बुद्धिमान माता पिता स्व. कन्या क ऋतुओं का गिनै,
व विवाह विधि न कन्या का घर में रखे ।

(६) "विवाहन चतुर्थ्यां रात्रौ गर्माधान माह ।

दाश्रण्येन पाणिना उगम्यमभिभृगोवु ॥ गाभिते ॥

अर्थ-विवाहान्तर चतुर्थ दिन घर दक्षिण हस्त स कन्याके
शुद्ध अंग का छू गर्माधान करे ।

(७) "पचत्रिंशत्तता वर्षे पुमाक्षारीतु, पौड्ये ॥

(धवलार हन सुभ्रुते)

अर्थ-पुरुष २५ व कन्या १६ वर्ष म विवाह करे ।

(८) "पाडशाठ्य वयः प्राप्ते संज्ञायास्तत् पिता सुखी ।

(भविष्य पुराण)

अर्थ-१६वें वर्ष सज्ञा का विवाह उसके पिता ने सुख
पूर्वक किया ।

(९) "त्राणि वर्षाण्यु दाक्षेत् कुमार्यं ऋतुमता मनो ॥ मनु० ॥

अर्थ-कुमारी ऋतुमता होने के ३ वर्ष पश्चात् विवाह करे

इस समय तक पीछे जो अवसर दिये गये हैं वे 'वाल्मीकि

विवाह' न करने के पक्ष में हैं । इस प्रकार क कई धर्म धार्मिक

ग्रन्थों में भरे पड़े हैं । इसक सिवाय कई पौराणिक तथा ऐति-

हासिक कथाओं से भी 'वाल्मीकि विवाह' सिद्ध नहीं होता ।

इसक विरुद्ध यमस्मृति, सवर्तस्मृति, सवर्तसंहिता, दत्त

स्मृति (कुल्लूगृह्य) आदि में बाल विवाह का समर्थन

है किन्तु-सामान्यतया दा स्मृतियों की रचना हुआ

करता है, और २ आज़ायें भी उला काल में वाप्य होकर माना जाता हैं उनक पश्चात् उनका उना महत्व नहीं रहता आज भी कई स्मृतियों क अनुसार कार्य कहां किया जाता है। यदि ऐसा न होना तो साम्प्रत समय तक स्मृतिया का सख्या १८ तक न पहुँच जाती।

भारत क प्रसिद्ध वक्ता तथा विद्वान् ज्ञानी सन्यासी— जिन्होंने कि अमेरिका तक में वदन्त की धाक जमाद स्वामी रामताथ जी 'भारत का भविष्य नामक अपन एक लख में अपने देश भाइयों को सम्बाधन करने इस प्रकार स्मृतियों क विषय में लिखते हैं।'

"गिय देश भाइयो ! याद रखिये, ये स्मृतिया और शासन आप क लिये हैं आप उनक लिय नहीं। सबत्र नित्य श्रुति का प्रचार काजिये किंतु स्मृति को समय की आवश्यकता के अनुसार बना लीजिये। स्मृति पर तुम्हारा पैतृक अधिकार (Heritage) हा न कि स्मृति का तुम पर।" आदि आदि ॥ अस्तु। (श्री रामतार्थ प्रन्यासकी वर्ष ३ खंड ३ सटुपदश भाग १४)

इस छापी सी नाटक की पुस्तक में इनका लम्बा वक्तव्य प्रिय पाठकों को गौरव तथा अकचिकर प्रतीत हुआ होगा सम्भव है कि कुछ भिन्न इसे मेरी अधिकार चेष्टा भी समझें। किन्तु यह जिस विषय का नाटक है उसक विषय में कुछ

प्रकाश डालने का लाभ स्वयं न कर सकेंना ही इस का मुख्य कारण है।

इस वक्तव्य के लिये मैं Indian year book 1929, मेम्बर रिपोर्ट, देश दर्शा, पुस्तकें, मासिक पत्र ट्रैक्टर आदि का महायत्ना ली गई है इसके लिये हम उनका प्रकाशना एवं लेखकों का कृतज्ञ है।

हिन्दी का सुप्रसिद्ध मासाहिक 'आरुण्य मन्देश' के बतारक के सम्पादक गण्डज को जिनका कि मेरी यह तुच्छ कृति प्रसन्न कर तथा निश्चय पुरस्कार प्रदान कर मेरा उत्साह बढ़ाया। (२) तत्समय का 'आरुण्य मन्देश' के वर्तमान प्रबन्धक पद्म जेयक आचार्य जगद्विरलाल जी तन्ना जिन्होंने कि प्रस्तुत नाटक की मूल कापी कष्ट उठाकर सम्पादक आफिस में पहुँचकर भेजा तथा समय पर मेरे पत्रों का उत्तर देते रहे को। (३) ध्यायुक्त दिनकर गङ्गाधर जी गारे बी० ए० उज्जैन जिन्होंने कि मेरी प्रार्थना स्वीकार कर इस नाटक की भूमिका लिखने की कृपा की को। (४) 'मोहन-प्रेस' इत्यादि के व्यवस्थापक मेरे जातीय गंधु-श्री चूडामणि जी मनुवंदा जिन्होंने कि प्रूफ देखकर मनायाग पूर्वक पुस्तक का छापकर अल्प समय में ही इस रूप में देने का कष्ट उठाया को एवं वे मित्र जो कि मेरा इस कृति का देख प्रकाशित करण का मुझे उत्साहित करते रहे, इन सब सज्जनों का उक्त कृपाश्रीके लिये आदिक धन्यवाद देना है तथा कृतज्ञ हैं।

गाटक क पात्रों क विषय में हाता सूचित कर देना उचित समझता हूँ कि पात्रों का नामकरण सम्झा किनी का दिल दुखा का नियत स किनी को जल्यकर गहाँ किया गया है और १ घे निज भागवत क अतिरिक्त किनी भाग्य के नि धाना हैं। यदि किनी का नाम पात्रों क नामा में न ही बोह हा तो व निज धारणा कर निरन्तर कर लें।

“चौथे-तदमा-जता”-का यह प्रथम गुच्छ है। यह मेरी पहिली रुति है और सब न पहिल यह उस जगतपालक जगदाधार गरम पिता परमेश्वर का सप्रेम-सादर अर्पण करता हूँ पर उस क इस प्रवाद को प्रेमा पाठक पाठिकाओं का भा ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूँ। “उर्या बालक कद तातरि याता, सुनिमन मुदित हाहि पितु माता।” गोस्वामाजा का इस उक्ति क अनुसार अच्छा बुर्ग जैसा कुछ कृति है-आप के कर कमलों में अर्पित है। यदि प्रेमाश्रय कर्ग जल क हाता आप-सहृदय सज्जों ने इस जता का भाग्य रक्खा तो शोध ही इसमें कमल प्रभा (५ अंका गाटक पृ० स० करीब १५०) नामक द्वितीय गुच्छ के लगने की सम्भावना है। उस समय आपक दर्शा को उलट उत्कठा है।

इस पुस्तक का सर्वाधिकार रक्षित है, काह महाशय छापो आदि का बिना पूछे साहस न कर।

• ईश्वर सब भाश्या का पैसा सदुपुद्धि प्रदा करे जिन न कि नाशकारा प्रचलित कुर्गतिर्यों का समूहाच्छेदक हेतु

कटिथरु हा सफलता प्राप्त करें ऐसी शान्तिप्रार्थना है।
यदि मरे इस झटके में नाटक में किसी का कुछ भी हित हुआ
ता मैं अपने परिश्रम का सफल समझूंगा। पुण मिलने का
आशा क्षिय विदा होना है। 'मंगलमय भगवान् भव का मंगल
करें। शुभम् भूगात्।

। गजद्वय—मातृ भाषा हिन्दी का एक तुल्य सेवक —

| | |
|-----------------------|------------------------------|
| मिता माह शुद्ध ५ | } लक्ष्मीनारायण क० चतुर्वेदी |
| (सप्तपद्मा) चन्द्रवार | |
| स० १६८६ ता० ३-२ ३० | |

(रामपुरा हो० स्टेट निवासा)
हेडमास्टर 'श्री गादायत स्कूल'

हिन्दी 'अध्यापक' 'श्रीगोदावत जैन गुरुकुल'

लक्ष्मीनदग पोष्ट छोटा सादही (मेवाड)

(Via Nemuch Cantt B. B & C. I Ry)



इस नाटक के एक्टर्स (पात्र)

पुरुष पात्र (एक्टर्स)

- [१] माधवप्रसाद—नाथपुर का एक ज्ञानार्थपति प्रसिद्धासेठ
माहता का पिता ।
- [२] माहता—माधवप्रसाद का पुत्र ।
- [३] नारायणचन्द्र—नाथपुर का प्रसिद्ध धनी, सठ-मोहिनी का पिता ।
- [४] सुरेशचन्द्र पाठक—मठ-माधव प्रसाद का मित्र ।
- [५] सुशासनग, गहनयात्रा " " " "
- [६] सुमतिनाथ गुप्त, " " श्रीर सम्ता ।
- [७] मजरा—डाक्टराजी अति उच्चशिक्षा प्राप्त एक अगरेज,
- [८] छाटा डाक्टर—मजरा का भ्राता (मोहन) एक वैसी, डा०
- [९] कर्मा—मठ नारायणचन्द्र का कान्हाय ।
- [१०] ईराजाल—सठ नारायणचन्द्र का सुताम का पुत्र ।

स्त्री पात्र (एक्टर्स)

- [१] गान्गी—सठ माधवप्रसाद की पत्नी ।
- [२] लक्ष्मी—सठ नारायणचन्द्र की स्त्री ।
- [३] माहिनी—मठ " " पुरी ।
- [४] चम्पा—माहिनी की सहेली ।
- [५] चमेला— " " "

मोहन-मोहिनी ।

मोहन-मोहिनी ।

अंक पहला दृश्य (परदा) पहला

स्थान नाटककौ रंगभूमि, समय रात्रि ८ वजे
(मंगल कामनार्थ-नान्दी प्रार्थना)



(गान-नज गाइए-)

तू रत्ना ! जगभस्ता ! दुम्रस्ता दानार !

भारत दश दशा जग्न करिय आकर शीघ्र सुधार ॥टेक॥

(अन्तर्ग)-गागेगा-कृपाति, अति दुःख दे रही ।

द्रव्य, धुँड, शक्ति शौर्य, हस्तार रही ॥

पतन-बन्ध-उग्ररूप धार जग्न रहा ।

सदगुणा का हान कर जगका जग्न रहा ॥

वरुणागात्र ! सुयश अपार ! १ पाछे पार ॥

दयादृष्टिकर शास्त्र द्रविणो आ प्रभु ! शीघ्र सुधार ! तू रत्ना ॥

(सूत्रधार का प्रवेश)-सूत्रधार—गया ! आज इस समय

ममाज का अगला दृश्य पर इस मया की बोझ शिवाग्रद
दृश्य देखा का उलट उत्कठा देल मेरा भी हृदय आनन्द को

तरङ्गों में तरङ्गित हो रहा है। हा ताकेंहें बीनसा दृश्य दिखाना चाहिये। [कुछ झोन्नकर] हाँ, ठीक जब मैं प्रथम प्यारी नटीको बुला उमकी माँ ता "शुभ सम्मति पूरु । (गण्य की ओर देखकर) गरी ! आ प्यारी नटी ! जरा यहाँ आओ का भी तो बट्ट उठाओ ।

नटी-आइ प्राणनाथ ! आइ मेधा मैं उग म्भन हुई (शुभ वेधमें उपस्थित हो हाथ ओढ़) इस दाम्नी का क्या आशा है ! सुत्रधार-प्यारी ! (हाथ म-दिखाकर) इन आगन्तुर महा शयों की आज काई उलम उगदश जाक दृश्य दफन की अभिलाषा है । तुम्हारी सम्मति में- इन्हें बीनसा दृश्य यताना चाहिये ।

नटी-शार्यपुत्र ! प्राणाधार ! मेरी इच्छा है कि आज इन सभी दि-द्यों का "वाला विवाह कुर्गीन विषयक माहा मोहिनी" नाटक का दृश्य बनलाना ही श्रेष्ठ है और यही सम्मुक्ति भी है क्योंकि नास्त्यत ममय म इस दुष्टा कुरात म देश का अधिक अहित माँ हा रहा है ।

सुत्रधार-[स्मरण करके] हा, आणवक्षसे ! अत्युत्तम-बहुत ठीक, वही करक बनलाने । किन्तु प्रथम इन सज्जनों म नागज्जाय कुछ गायन सुनाओ पश्चात् निधाओ आ उमकी तैयारी करा, मैं माँ शीघ्र ही तुम्हारी उपस्थित होता हूँ ।

नटी-[हाथ ग्राह, मन्तक कुला] जाँ आशा है ।

गायन-[मर्ज-म्है काइ जामू भाईया गोबू का रम भाय]

राग रघुपुत्र-मेवाड की गरबा-धामा ठेका ।

[बाद्य व क्लार नृत्य सजित]

तू सोच गारन ! खाल आन ! बुद्धिमें निज तोल ।

(बुद्धि में निज ताल रे ! तू बुद्धिमें निज ताल ।)

सुगीति सुधा गानकर, कुर्गति-विष न घोल ॥ तू सोच ०

अन्तरा-दादा-देश, स्वजाति, नमाज का, दोरहा ह्वाले गहा ।

जटिल समस्या हारही, हो कैसे उत्थाग ॥

सुधार को गसार, बजा समुझति डाल ॥ तू सोच ० ताका ॥ १ ॥

अन्तरा-(दादा) गर्मी प्रेम है सघटा, गर्दि निज तन बजया ।

‘जहमी’ भा है तज चली, क्या हागा अवना । ॥

तू हाग-दाग याल, जगदीशकी जय बोल ॥ तू सोच ताका ॥ ३ ॥

(नृत्य करते हुये धारे धीर प्रस्थाग)

सूत्रार-(सबों की आर दखकर)

॥ गायन ॥

अद्भुदर्शी हैं, जा अकुर खोद फेरते ।

बच्चों का व्याह करते, शुभा शुभ ॥ देखते ॥

वे जिल्लते उठाते फंम, कुर्गति एक में ।

देनिय पाठक ! बही इस नाटक के अक ग ॥

(समयानुसार पाठक की जगह दर्शक का प्रयोग भी किया जा सकता है)-

(सूत्रधार का तात्वां वजाना—यथायंक पर्दा बदल
 'शामो का दृश्य दिखाइ देना, सूत्रधार का
 भी गायब होना ।'

(दृश्य पहला पूर्ण)

“मोहन-मोहिनी”

अंक पहला—दृश्य (परदा) दूसरा ।

स्नान—जोधपुर में सठ माधवप्रसाद का अपनी स्त्री
 मालती पुत्र मोहन के सहित अन्त पुर में
 कोच पर बैठे दिखाइ देना ।

मालती—(मोहन को गोद में ले प्यार करते हुये) माधव से-
 प्रियतम ! पुत्र मोहन की अवस्था ७ वर्ष की होगी ।
 अब इसके विवाह का आप शीघ्र व्यवस्था कर दें ता
 अच्छा हो ।

माधव—प्यारी ! माहता तो अभी गिरा बच्चा है अभी मे उसे
 विवाह के पन्धरे में डालने से हाणि के अतिरिक्त लाभ
 कुछ भी नहीं है ।

मालती—लाभ, लाभ आपका क्या चाहिये ? धन है दीलत है,
 भौकर है चाकर है, दुकाम है लपेता है, बाग है घमाना
 है, गहना है जाहना है, मोटर घाटर न जान क्या क्या

मन रुझ है। फिर भी आप नाम हा लाभ फरमाते हैं
आपका क्या चाहिये ? क्या किन्हीं बातों में है ?

माधव—अरी मुझे यह सब कुछ मालूम है, इसमें उद्योग का
क्या ? मोहन का अभी व्याह की आवश्यकता नहीं है।

मातृता—तो, इस किन्हीं बातों का आवश्यकता है।

माधव—उसका इस समय विचारण करना, खुद पहचाना,
लिखाया, सदाचार सिखाया, व्यायाम का शौक
दिलाया, ब्रह्मचर्य का मस्तिष्क बतलाना, पुष्ट बलिष्ठ बनाना
गौर उसका भाग्य ज्ञान उच्च ज्ञान रूप बनाना।

मातृता—(हसकर) अरु याह ! यह भा आपन एक ही कहा !
क्या उस पढ़ा लिखाकर नौकरा करवाया है, कमरान
सिखाया क्या भलाहें में लड़वाया है ? ब्रह्मचर्य सिखा
क्या माधु बाबाग है ? मरा व्याग पुत्र यदि बिना गढे
हा दोगों हाथा म धा लुटाया कर तो भी माग पादा
तक धा न पात ! गौर चाकर जहाँ उसका पनाग
गिर खूना गिरा का तैयार रहते हैं। ऐना स्थिति में
आपका उसका शरीर का चिन्ता मी न करना चाहिये।

माधव—अरे तुम आज कैसा बातें कर रही हो ? देश का दशा
तुम्हें मालूम नहीं। आज हमारा कमजोर व बागल हा
(मुड़ों डारा) हमारा बहुत बटिया उड़ाई जाता है, मा
शूट जाना है। घमंघ्राण देशगर्तों का हत्यार्य जाना है
दयताओं का अपमान हाता है। फिर ससार में बुद्धि

माता, विद्वान् शाय बलवान् का हाँ बंदर हानी है। मूर्ख और अशक्त अपने अनुष्य और धन की ही क्या मर्य सुन का हाँ रक्षा नहीं कर सकना। लक्ष्मी तो चञ्चल है उसका क्या ठिकाना ? आत्त है बल नहीं ! क्या तुम न धनवानों के मूर्खों दासों का दुर्दशा हाते नहीं देखी है ? ऐसी बात क्यों ?

मालती—अपना को इन बानों से क्या करता है ? वे सब उगके दुर्भाग्य की शान है।

माधव—क्यों नहीं करता है ? क्या तुम्हारे पुत्र ने पक्षी मो-
 गार्य हा का ठेका ले रखा है ? इसका क्या सुत्र है कि उसका कभी दुर्दिनस पाला हाँ न पड़ेगा । लौकिक व्यवहार भी तो देखना चाहिये । सब बानोंका साचा न्यायिय । पारा पहिले पाल आधमा चाहिये । किन्हीं कवि ने कहा भी है कि—

दोहा—जिन न गढ़ाया पुत्र का सो पितु बड़ो अभाग ।

माहत बैठा युव सभां जया हसत में बाग ॥

और गीत में भी कहा है कि—जिन माना पिताश्री न अपने पुत्र का विद्वान् नहीं बना था वे उसका शत्रु है” ।

मालती—दृश्य सदैव उसका रक्षा करेगा । विद्वान् और बलवान् सबका बड़ी रक्षा करता है ।

माधव—सुन, “अपना बल खड़ा जा हाना, उसकी मदद करने मगगान् । परमुक्ताऽपेक्षा । नहीं हाना ऐसा कहते हैं

‘मिहान् ॥ १ ॥ इत्थं मा उन्मी की सहायता करना है
 जा अपना वत्ता करने की स्वयं शक्ति रखना है । अशक्त
 का यह मा सहायक नहीं है । ससार में उन्मी की
 जीवित रहने का अधिकार है जा बलवान है ॥ अशक्तों
 का ना हम ससार में जावित रहने तक का अधिकार
 नहीं है । इससे समय रहने तुम्हें फिर चेनाया दता
 है कि अगे पुत्र का अगर बनाये हुए सब सदगुणों में
 विभूषित करना का पुण्य प्रयत्न क्या और अधिकृत
 में क्या सब दम बाह्य रूप तक तो उनके विवाहका
 नाम तक मत ला । नहीं ना एक दिन पुण्य परचास्ताप
 करना पड़ेगा । हाथ मत के पछनामा रहना पर फिर
 पछनाय हान कहा जब निगियां खुा गई खेन’ कहायन
 चरितार्थ होगा । (उठा चाहना—माहिमी की हाथ
 पकड़ बैठाता)

माहिमी—(प्रेम युक्त गम कटाक्षकर, गले में हाथ डालत गलों में
 अश्रु भर पुा कहा) प्रियतम ! मेरा माहोंर विवाह
 प लिये एक छुटा , सा प्राथना की हितु आया न जा
 कहा नहीं का ऊटपटांग बातें ला खीं । प्यार ! आप
 का मेरी मद प्राथना ता स्वाकार करना ही रहमी ।
 चाहें कुछ भी क्यों न हाजाय । करिय प्यारे स्वाकार
 करिये । [रुदा करना]

माधव-अच्छा ! पहले यह तो बनलाआ कि तुम्हें यह कुबुद्धि कैसे और क्यों उत्पन्न हुई !

मालती-एक तो अनेकी जानि और पान पडोम व पेस धियाह दखकर मेरी भी डचन्ना हुई कि उनक समान मर प्यारे, आँखों व नारे, गादन क भी एक छाटा सा कमकुम करना बहुत आजाय तो उस सुन्दर जाड़ा का देख आँखें ठहा करूँ । हमरे (चुप) ।

माधव-क्यों ! चुप क्यों होगई ? कहा, हमरे क्या ?

मालती-इन ढलती उमर में, बड़ जनर, मनर तनर देवी-- देयता, ओम्के-स्याग, दया-दारु ताजिय-मजार, गार- पैगम्बर मुलता-सुशद गराय अगार, और पूजा-पाठ पछ-इयग आदि आदि मत-सुना मानना बरक एक लाल पाया है । मैंने इनक लिये क्या २ नहीं किया ? आगम अब क्या निपाऊँ ! मैंने इसक लिये धर्म छाड़ा कर्म छाड़ा और बड्पग का विचार भी छाड़ा, तब घड़ा बंठगाई स इन उम्र में एक पुत्र मिला, यदि धियाह क पाहले मैं मर गई या आग ही का कुन्नु हागया-(अगन चबाकर)-हाय आगक दुश्मना का-ना कनक शुक्र कर्ता छाटी भी बहुत देखन का होँस मरे सुन ही मन हा मैं रह जायगा । मरत पर मेरा गति शा न होगा । इसीम पुन, विनय करता हूँ कि जरूर २

स्वाकार करें। १२ वर्ष बिस्मने देखे हैं। एक गल की
मा खबर नहीं है।

माधव-मावला कि मेरा तुम्हारी बात बिलकुल मजूर गयी ता ?

मावला-(गल से हाथ हटा काध से गन तरे कर) ता ता
मुझ अपना पाकर (गिला क घर) भेज दो और अपना
लडक को लेकर रहा। मेरे भाग्य में कुआ, तालाब,
जहर जा कुत्र हागा-होकर रहेगा, तुम्हारा बला से !
आपको मुझसे क्या। आज से तुम मेरे और न मैं
तुम्हारी ! [उठना जाना चाहता]

माधव-(हाथ पकड़ अपना तरफ खींचकर प्यार से)-अरे
कहाँ चली ? जरा पैदा ! सुना तो ! मैं तुम्हारे और
तुम्हारे पुत्रक भक्तक लिये हूँ। इनकी बात कहो उमंग
आती। तबश तुम्हें एक गान रुचता। अस्तु। तुम्हारा
'इन्द्रानुसार कल हा। से इस विषय का प्रयत्न करता हूँ,
प्रयत्न में लगता हूँ। जयपुर में मेरे मित्र एक सज्जन न
यहा एक बहुत ही सुन्दर कन्या है किन्तु यह इतना कम
उमर में आता उनका विवाह करने को उद्यत होंगे या
नहीं इसका आशंका है। विवाह न हा तो अभी सगाह
(मैगा) हा सहा। विवाह कुछ दिना बाद होजायगा
मेरा विचार ता २४, २५ वर्ष से कम की आयु में माहग
का विवाह करने का नहीं था पर जिस हालत में तुम
जिह, कलश और अशक्ति पर दो उनाक हा रही हा तब

मुझ भी अग्निच्छापूर्वक गजवृत्त स्वीकार करना पड़ता है। पर याद रखना-इसका फल कुछ होगा। उस समय पाश्चात्ताप करोगा और मेरी बात याद करोगा। मैं तुम्हारा और माइता का भाग्य ?

मातता—(प्रसन्न हो आकाशवाणी) अहाहा ! क्या ? आज आपन इस क्षण का धनता स्वीकार की आपका धन्य है। [माधव की कुछ उत्तर न दे उदास बैठता]

(पटाक्षेप)

(अङ्क पहला, दृश्य दूसरा पूर्ण)

“मोहन-मोहिनी”

(अङ्क पहला, दृश्य तीसरा)

स्थान—मैंठ माधवचन्द्र का बैठक-घर—बीच में मेरा

उसका आसनाम कुर्सियाँ हैं सठजी

मोहन के सहित बैठ हैं, समय

दिन का ५ बजे।

माधव—(मल्लो भावसे स्वगत) हाय ! क्या करूँ और क्या न करूँ ! उधर तो क हठ का धिंकार और इधर पुत्र के माधव्य-जीवन सुधार का ध्यान। “मद गति सांग उड़ूँकर क्या है प्रभु ! बल दा । कर्तव्य पर दृढ़ रहने की शक्ति प्रदत्त करे ।

माहा-(प्यार स) क्यों गिता जी । क्या कहना हाता है ?
 क्यों कहते (करत) हैं । मेला क्या क लिये माता जो
 कल क्या जाता ? यह क्या होश्रा है ? जिसका दल
 से लोह । और आप क्या कह जहे पढ़गा, बुद्धि
 कल्लत ? [रकाळ, सफाछ]

माधव-(चौककर), कुछ दुःखिन हा, नेत्रों में अश्रु भर—क्या
 माहन ? क्या पूछा ?

मोहन-(देखकर कुछन्दर कर) अल गिता जा । मेला बाबूजी ।
 आप ता जाते हैं । नालाज हागय ? अब क्या गर्हो,
 पूछूंगा बाबूजी । [प्यार स निपट जाना]

माधव—गर्हो जल्ला । मेरे प्यारे मुन्ना । मैं तुम्हसे नाराज क्यों
 हा । लगा ? तरे प्रश्नों का उत्तर थाहा । टेर मैं ही मेरे
 मिश्री द्वारा मिलगा । पड़ित जी आयगे । पड़ितवांग
 आयगे । तुम्हारे मामा जो आयगे । वे सब अर्मी आन
 हा होंगे ।

मोहन—मामा जी मेले लिये । क्या लायगे ? मतलाआ बाबूजी
 क्या लायगे ?

माधव—जा कुछ व लायगे सो देख लेगा, तू ले लेना ।

माहन—क्यों बाबू जी । आज मा रन छब को मिथाइ खिता-
 आगे ? क्या माय (ठ) है ? प्रसन्न हागा ।

माधव—क्या तुम मा मिठाइ लाआगे । पेटी ? तुम मिठाई,
 मिठाइ खाना पसन्द करते हा ?

मोहन-नहीं पिता जा। मिठाई खाने छे ना जोग होता है ?

तुम। ता उम्ह दिा कहने थे न ? मैं मिठाई नहीं खाऊँगा
माधव-थाड़ा खाने स तो नहीं हाता बेटा ! बहुत बहुत खाने
स हाता है।

मोहन-(हँसकर) अच्छा अच्छा * 'धोली धोली

(पंडित, सुमेशचन्द्र पाठक, सुशीलसग पहलवान,

सुमनिलाल गुप्त का प्रवेश)

मध आगन्तुक-(हाथ बठा मस्तक नवा) सेठ साहेब !
अभिवादा ।

सेठ माधव०-(लहे हो, फरजाड प्रमत्त मुख से) आइये ।

आइये । पधारिये । इधर बैठिये । (कुर्सीयों का आर
इशारा करना) [सबका गया रुगा बँठा]

पंडितजी-कहिये सेठ साहब आपका स्वास्थ्य तो ठाक है ।

अ ज समरण करी का कैसे कृपा की ?

सुशील से०-(हँसकर) अरे भाई कुछ मिठाई बिठाई का
समाम हागे, वाला हागा ।

सुमनिलाल-अरे भाई तुम्हें बार किसी कारण से ही क्यों न

। सुनावे, तुम तो उनके यहा मिठाई खानेका निश्चय

कर ही जाया करा । [हास्य]

सेठ माधव+आप लागा स क्या मिठाई दूर है । मगाऊ ?

। [तीकड़ को पुकारना]

मोहन-(हँसकर) मिठाई खा छे तो जोग (रोग) होता है

न बाधुनी ? क्या छव [सच] है न-माम जा ?
(मामा जा)

सुमतिजान-(हनकर) अवश्य होना है माहग ।

माहग-ता ये भिपार्ह मगज को क्यों कहन है मामजी ?

सुमतिजान-ये ता रागी हागा चाहते हैं माहग । तुम भी बहुत
मत खाया करो, मैं भी नहीं खाता ।

माहग-जागा होगा चाहते हैं, अल जाम जाम । अड्डा मैं भी
। नहीं खाऊंगा ।

प० सुरेशचन्द्र गा०-सर माई, सेंठ जी मेरे प्रश्न का तो उत्तर
दो हा नहीं पाये और तुम बीच में ही 'दाज भात में
'भूमरचन्द' दाकर फूट पड़े । हाँ, सेंठ साहब फर-
मायेगा-आज बीगसा बात . . ?

सेठ माधव०-सुनिधे साहब । आप मेरे अन्तरंग मित्र हैं सुमति-
जान जी मेरे साथे होत नुये भी एक सखे हितैषी
दास्य से कम नहीं हैं । पहलवाग साहेब ता मेरे माह
के समान ही हैं । जब कभी कोई जटिल समस्या आ
पड़ता है, उस समय आप सज्जनों की युग सम्मति
आवश्यक हो जाया करती है । येना सिधति में ही
आप-जोगों का कष्ट देना पड़ता है । कल स सुमति
जान जी का बहिन मोहन का विवाह अर्मा कर देना
का हठ पकड़ रहा है । मे निज मतिनुसार उस बहुत
ईश्वर सगुणा बुका पर नहीं मारती, आप सब लोग ,

अच्छी तरह मोल्य सभ्यता, कर जाई ऐसा बान का
माग दूद निकालिय कि जिससे न तो 'नरप मरेश्वर
जाठा हा दूरे' ।

सुशासन पदलवान-आप तो मोहन का 'गुरुकुल' या 'श्रुति
कुल' में प्रवेश करवा दाजिय ताकि आपका
उद्देश्य अनायास ही सिद्ध हो जाय ।

सुमतिमान-भाई ! तुम मेरी बहिन को समझा लो, जानत हो,
इस कारण ऐसा कहते हो । वह माहग का अपना
पाम सफ़दापि अलग न होने देगा ।

सुरेश्वर पठक-भाई ! तब तो मेरी सम्मति यह है कि—
'उनके दृढ कारण सगई, (वाक्य) की
रस्मता कुछ माह पश्चात् ही- पूरा करवादी'
जावे और विवाह लडवी वाले को समझा
बुझा कर जितने वर्ष करना सम्भव हो रुकवा
दिया जावे, इस कार्य में सुमतिचन्द्र जी भी
पूर्ण प्रयत्न कर अपना बहिन को समझाते
बुझाने रहें और विवाह की राह का लक्ष्य
ध्यान में रख उनको शांत करते रहें । सारांश
समय समयपर कार्य शांति करने से घर अच्छा
नहीं मिलता । आदि अनेक कारणों का दिग्द
र्शन कर मनुष्य रहें । इस अधि में अपना
सब मिलकर 'मोहन' को जितना भी योग्य

दी। सके उसका यत्न शीघ्र ही शुरू कर दें।

आग इश्वर मासिक है।

सुप्रतिजाल—आपका सम्मान उत्तम है। इसका अतिरिक्त मुझे
भा। अथ कोई माग दृष्टिगाचर नहीं हाता। मैं भी
आपका नव प्रकार की सम्मानि मागन का उद्यत हूँ।

माहन—यावृत्ता। 'मला घाना का ना आपन औल किता १ भा
कुत्र उत्तलगाही दिया।

माधन—प्रियपुत्र। 'कल स मेरे मित्र ये पंडित जा तुम्हें विद्या
पढ़ाता प्रारम्भ करावेंगे। तुम्हें पेश ही गंगा का उत्तर
भी ता माखता है १। इस कारण येम हा क्या समझ
भा अच्छे २ उपदेश और वार्ता २ तुम्हें बतलावेंगे खुब।
ध्यान से सीखता। माखोगे १।

माहन—प्राकागे १। (उच्चारण) क्या न झूझूंगा।

सुशालसग—मैं तुम्हें नव प्रकार का व्यायाम सिखाओ तैयार
हूँ सीखोगे १ माहन। (हाथ बगैर स डड बैठक
का नकल बनाती)

माहन—व्यायाम क्या ? कचरत ? (खुश दाहर), जहर
झूझूंगा। मैं भी पहनता बनूंगा पहनता १

माधन—और मुझसे तथा अपने मामा जी से क्या सीखोगे
मोहन ?

माहन—आपसे झूझूंगा हथियोगे धन धन धन हथियोगे (सबों
का हास्य)।

अच्छी तरह सौज समझ कर काइ ऐसा बीच का
भाग दूँ निकालिये कि जिससे न तो सँग मरे और
लाठा हा टूट' ।

सुशानसेन पहलवान-आप तो मोहन का 'गुरुकुल' या 'श्रुति-
'कुल' में प्रवेश करवा दीजिये ताकि आपका
उद्देश्य अनायास ही सिद्ध हो जाय ।

सुमतिजाल-भाई ! तुम मेरी बहिन के साथ ही नहीं जागते हो,
इस कारण ऐसा कहते हो । वह मोहन का अपना
पाम संकटापि अलग-अलग होने दगा ।

सुमेशचन्द्र पाठक-भाई ! तब तो मेरी सम्मति यह है कि—
'उसके दठ के कारण सगाई (वाद्दान) की
रहमता कुछ माद पश्चात् ही पूरी करवा दी
जावे और विवाह लड़की वाले को समझा
बुझा कर जितने वर्ष-रक्ता सम्मान हो रुकवा
दिया जावे, इस कार्य में सुमतिचन्द्र जी भी
पूर्ण प्रयत्न कर अपना बहिन को समझाने
बुझाने हूँ और विवाह की रोक का लक्ष्य
ग्यान में रख उनको शांति करते रहूँ । सारांश
समय समयपर कार्य शास्त्र करने में घर अच्छा
महो मिलता । आदि अनेक कारणों का दिग्द
शां कर सतुष्ट रहूँ । इस अधि में अपना
सब मिलकर 'मोहन' को जितना भी योग्य

धना मर्के उमका'यल शीघ्र ही शुद्ध करदे ।

आग'इश्वर साक्षि है ।

सुमतिजान-आपका'सम्पत्ति उत्तम है । इसके अतिरिक्त मुझे
भा अग्य कोई माग दृष्टिमाचर नहीं' हाता । मैं'भी
आपका सब प्रकार की सम्पत्ति मागत वा उद्यत हूँ ।

मादा-बावृत्ती 'मला गती का ता आपन औल किछा न भा
कुत्र उत्तल नहीं' दया ।

माधव-प्रियपुत्र ! 'जल म मेर मित्र ये पंडित जी तुम्हें विद्या
पढाना प्रारम्भ करावेंगे । तुम्हें एम हा प्रयाग का उत्तर
भी ता साखता है । इस कारण बैम हा क्या उनसे
भा अच्छे २ उगदश और'वार्त २ तुम्हें बतता'वेंगे खूब
ध्यान स साधना । साखागे'ग ।

मादा-आखोने ग । (उच्चारण) क्या १ आरूंगा ।

सुशालसग-मैं तुम्हें सब प्रकार'का व्यागाम सिखानको तैयार
हूँ सीखोग १ मादा'ग । (दाय बगै'ह स डड बैठक
का नकल'करगी))

मादा-व्यागाम क्या ? कचरन ? (खुश होकर), जबर
छाकूंगा । मैं गा'पहतवा'न बनूंगा'पहतवा'न ?

माधव-और मुझसे तथा अपने'गामा जी से' क्या सीखोगे
मादा ?

मादा-आपम'छाकूंगा रुपये'गिनग-धन'धन'धन छपगा । (सबों
कल हास्य)

माधव-अच्छा वही साम्राज्ञी । य तुम्हें श्रीर भा घट्ट दूना है
वही २ बातें समझायगे ।

मोहन-मे नुवों का एक साथ कैदें छीकूंगा बाबूजी ?
सुरेशचन्द्र-येदा ? तुम्हें सब धार २ एक एक बात ही अच्छी
तरह समझाकर सिखायेंगे । तुम्हें कुछ भा १ अस्-
रगा । तुम खुद ही शोक न मीमाणा । फिर तुम
बहुन बहुत अच्छे बन जाओगे ।

मोहन-(प्रसन्न हो कूत्ता हुआ) तब तो बहुत अच्छा पड़ित
जी खूब पढ़ूंगा लिखूंगा छीकूंगा ।

(माधव की सर्वा का कुछ जलपाता करना-गान सुनारी से
समान करना और मरों का धमकाव दे
नगा कर प्रस्थान)

[गदाहीन]

(अङ्क पहला, दृश्य तीसरा, पूर्ण)

‘मोहन-मोहिनी’

[प्र क दृश्या, दृश्य पहला]

स्थान-अजयपुर-मठ गायत्रीचन्द्र और रमका पत्नी का
[लक्ष्मी] अजयपुर में बैठ दिखाइ देना]

मोहिनी-(प्रवेश कर)-अन्ना अन्ना । आली अन्ना । मेली
गुरिया का गर्दा तूत न वा गल्लाई, उड़े । अन्ना ।

जदगी—ता, देजा बेटा ? मे उमका गर्द जाइकर उस जिला
दूंगा । तू ता गुटिया क लिये रप्पाइ बाता ।

माहिना—अच्छा जाना हूँ । उरुक लिय अमा जछाइ बगातो हूँ
फिल उछे लिजाता हूँ ।

गारायणचन्द्र—कथा सुनो, बिट्टू ! हमें नहीं बिनायेगी ?

माहिना—बाबूजी । या रछाइ ता गुह गुहा क लिये बोगी ।
उरुछे आपका पेन गाल हा भलगा । अच्छा जाती हूँ ।
ठना जाता है । (सबका हसना माहिना का प्रस्थान)

गारा०—प्रिय आज जायपुर न मेरे मित्र माधवप्रसाद का पत्र
आया है ।

जदगी—क्या उनके घर सब प्रसन्न तो हैं ? कुंआर जी की पढ़ाई
आदि का कुछ गवन्ध दिया है या नहीं ।

गारा०—गवन्ध योगैह उन्हीं पर कुछ दिया है किन्तु उनकी
छा पुत्र का विवाह शास्त्र ही कर लेगी अभी स जिह
कर रहा हूँ । इसमें अनुमाता हाता है कि उनके ये शुभ वि-
चार और यहा ० आर्वाक्षायें पूण न हो । पायगी । उनके
समाग उमका घमैपतामा यदि समझदार हाती तो कितना
अच्छा जाता ।

जदगी—माना और सुगन्ध होता । प्रियनम । अगला मोहिनी
का भा गढा जित्वा गया शुद्ध र्य में निपुण कर आदर्श
क याग्य बाता देता चाहिये ।

गारा०—मे पदितो स हा इस विचार में हूँ । अब उसको श्रीम

ही कार्य रूप में जाऊंगा, पूर्ण प्रयत्न करूंगा। देखा
जगता यह पत्र है। भ्याग स सु मे।

आहार

मु० जाधपुर।

ता० १२-६-२३ ई०

श्रीयुक्त मांगीय सकल गुणालम्बन सठ माहेश्वर।

गारायणचन्द्र जी मा० जयपुर की पत्रिक्त मवा में।

परम स्निग्धवर। मम्रेम सान्द्र जुहार-आशिषादन॥

मैं यहाँ पर उम्र जगत्पालक जगद्वाधार परम पिता पर-
मेश्वर क कृपा कटाक्ष-पथ आपकी अनुग्रह में सकृदुम्भ माना
हूँ। आशा है कि आप भी उम्र की अनुग्रहा से पमस्तता
पूर्वक होंगे। आगे समाचार यह है कि "बल से" चि० मोहन
का माता अपने अवाध पुत्र का अर्धा विवाह कर दोगे की
मुखतावश हठ कर रहा है। घर कलश करो नक पर उताक
हा रही हैं। मेरे विचार ता आप जाननहा हैं। मेरी ता पत्रिक
इच्छा यह है कि मोहन का विवाह कम्बल युगावस्था में हावे
मैंत उम्रका समझाने में कोई बात उठा न रहा किन्तु यह
अपनी हा बात पर अड़ी हुई है। उम्रका भाई भी उम्रका
समझाने का पूर्ण प्रयत्न कर रहा है। आपका सूचित करता हूँ
कि यदि किसी प्रकार का असुविधा न हो ता जितना शायद हा
सक आप समाद की रहम अदा करदें और विवाह क लिय
जितना बिलम्ब करना सम्भव हा करता रहें-माहता की भी
योग्य बनाने की चेष्टा करें। बिलम्ब की यह चाल अघिर्त दिन

म चलेगी ता भी मुझे विश्वास है कि जितना कुछ बिलम्ब होगा, माहन के एक में हितकर ही होगा।

गत् गुरुवार द्वितीया पुन गद्य के दिन से मोहन का विद्याभ्यास सस्तरा करा दिया है। व्यायाम आदि का भी समुचित प्रग्रथ दिया गया है। आगे इश्वर मानिक है। सदैव कृपा व प्रेम बगाये रहिये। कुशल पत्र दे याधित करते रहिये। शेष शुभम्।

गद्यवीथ—प्राति गात्र—

गाद्यप्रसाद।

जदमी-दा ! देखिये, गद्य से कैसी परधशता भक्तकर्मा है ! घर, बहण्या और लौकिक व्यग्रहार से भा ता डरना पड़ता है।

गा० च०-इस विषय में तुम्हारी क्या राय है ?

जदमी-जब आगे माहिनी का सम्बन्ध मोहन के साथ ही करना निश्चित कर लिया है-उमरा जा कि आगे के मित्र भी हैं-प्रचन भी दे दिया है तब ये चाहें जय विवाह क्यों न करें। फिलहाल उनकी राय के अनुसार ही समाइ कर दो में भा कोई हानि नहीं है। उनकी बात भी रह जायगा और लड़का भा रह जायगा।

गा० च०-अरे इस उमर में ! मोहिनी तो अभी ६ साल की ही है न ?

जदमी-अभी विवाह थोड़े ही कर रहे हैं। और यह ६ साल की

और पक्षिना आदि घीगङ्गाआ क समाग सन्ताप
उत्पन्न हाता का ज्वलन देखना ता मार्गों आकाश
पुसुम (तारे) नाडा क समाग अवभाव है । क्यों
कुछ समझा ?

जदगी-समझा प्राणायाम समझी । (कुछ उदास हा) अशक्त
मूख सन्ताप ता मार्ग-भू-की भाव होगी । अब यह
आपनीहा रक्षा न कर सकगी ता अपनी यह वेदिया और
म्यक्तम परिजनों की क्या खाक रक्षा करगी । हे ईश्वर !
(निश्वास)

गा० च०-ईश्वर मे प्रार्थना है कि यह हम सब को सुबुद्धि
प्रदान करे । अन्धविश्वास का शीघ्र नाश हो ।
जदगी-तो क्या उनका राय मानगे ? सगाई का रूम इसीमाद
में पड़ा करेंगे ।

गा० च०-हाँ, फल ईश्वर लिये पत्र और मनुष्य भेजेंगा ।
मजबूत है ।

(पटाक्षेप)

(अंक दूसरा दृश्य पहना पूर्ण)



मोहन-मोहिनी.

अ फा दूभरा-दृश्य दूभरा । .

[स्थान माधवप्रसाद का सजा बैठकजाना माधवप्रसाद,
मादग, 'सुशचन्द्र', सुशानसन, सुमतिमान का बैठ
दिखा देना] समय दिन ४ यजे
विद्याम्मा व ५ वर्ष बाद ।

माधव- (सुशचन्द्र का आर देवकर) पंडित जी महाराज !
मादग भी गढ़ ड व्यायाम उपदेश आदि का क्या हाल है ?
पादमजी-मठे माहिष ! मादग मरा शिष्य है । नीति व अनु-
सार उन्नी व सम्मुख खना की प्रशना करी भमगा
है । किंतु जब आपने पूछा है तो कहना हा पड़ना है कि
"मादग फइ लडकों में एक हा है पढ़ने म लिखा म,
विषय में व्यायाम म व्यायाम एवं मद्गुणा म युक्त है ।
'ब्रह्मचर्य व प्रभाव म शरण की वान्ति मा मद' व लुप्त
कमताय है । यदि इना प्रचार मादग म रूप आपका पूरा
लक्ष्य रहा, तो मादग प्रतिभाशाली चार और आदताय
व्याक्त हागे । इन्हे इस विषयु करें ।"

मादग-पंडित जी । इसका श्रेय आप मय मज्जा में का हा है
जिम्हें कारण मादग की सध वानों में उपात हा रहा है ।
सुशानसन-मठजा सादिष ! इसका मया श्रेय तो वगत पद
आपका दना चाहिये कि जा पांच २ वर्ष स घर म इस

चाद झाड़ने ह ना लानिडा के साथ गृहकुलह तैगार है।

दा ता गार से तंग आगवा हूँ। अब ता करन में ही गत्यनर है। जो भाग्य में हागा देखा जायगा।

सुमनिलाल—जब ऐसा ही है ता कर दाजयगा। भक्त मिटेगा ऐसा ही होगा ता मुकलावा (डिगमगी, गोना) दा चर साल बाद कसैंगे। और मोहन'की शिक्षा-सुधारादि का कार्य इसी प्रकार शुरू करेंगे।

सुरेशचंद्र—हाँ, यह विचार उनका उद्युक्तता नहीं है, जितना कि हांग चाहिये किंतु इस परिस्थिति में किसी बदर डाक है।

माधव—ठाक हो या न हो गाइ ? गर गरता क्या लखता ।

(नौकर का प्रवेश)

नौकर—सेठ साहेब ? जयपुर से एक गाइ और एक ब्राह्मण पैस दा जन आये हैं।

माधव—अच्छा, यहा पर ही उन्हें लिखा जायगा।

नौकर—बहुत अच्छा ? हुजूर, (नौकर का प्रस्थान)

माधव—हा जिन बात की अभाव था हो रहा था और जिस की आशका थी वही बात आगने आई।

(इतने में दानों का नौकर के साथ प्रवेश)

ब्राह्मण—सठ जी ? आशावादी न। नोद—जय राम की शत्रु ?

(ब्राह्मण का सठ जी का पत्र देता),

माधव—(दानों का आदर से बैठकर)/उनका तथा नारायण

चन्द्र की कुशलमगल पूछ-कुछ बात दग्ग-का पश्चात् ।
(मोकर मः) य दामों दूर स आय है । यव हुये-हैं । एक
लिये ठहरा, भाजन आदि का समुचित प्रबन्ध करा ।

(गौर का दोंनों का साथ जागा)

(सबों को लक्ष्य कर) लोभाई? जिम्मी आशका थी
बहा हुआ । लगुन आगई हैं । य-माघ-शुक्ल ५ का हा विवाह
निश्चित कर चुक हैं । अब काई-बस का-बात नहीं ।

सय—(कुछ उदास हा) सठ-नाहेय क्या बिचा जाय । हमें
इस बात का हार्दिक खेद है । अब ता 'हाइ है, यही जा
राम रवि गान्ना, को ऊँर तर्क बढा-हैं शान्त' । पर ही
निभर होना पडता है । आप ता घेय धारण कर विवाह
कर हा डालिये । ईवर-सबकुछ अच्छा ही करेगा । अच्छा
आशा हो ।

माधन—सबको प्रणाम कर-किर पधारियेगा ।

(सबों का प्रस्थान)

(द्वापरीन)



“मोहन-मोहिनी”

(शङ्ख दूसरा, दृश्य तीसरा)

स्थान-तोघपुर = (मठ माधनप्रसादक जनाना कमरे
में माधव, मानता दोनों का परस्पर बाते
करते दिखाइ दिया)

माधव—प्रिये ! अब तो तुम्हारे मोहन का विवाह हो गया।
तुम्हारी इच्छा व अनुसार छुमछुम करता घट्ट मोहन क
लिय मोहिनी आगई ! अब तो तुम्हें सन्तोष, शान्ति और
आनन्द मिलता ।

मानता—(गन्ध कटाक्ष कर प्रमत्त हो गले में हाथ डालते) 'हम
कन-हर्ष, स्वामिन् ! आपन एक मेरा हादिक इच्छा तो पूरी
की अब तो एक दूसरा इच्छा जा इश्वर पूरी करद-ता सुख
सम्बर । यह दूसरी इच्छा है माहन क पुत्र का मुह
देखना ।'

माधव—[हँसकर] तुम्हारी यह इच्छा भी इश्वर पूरी करेगा
ही । [ताँसे स] 'हाँ तो तुमतां तुमता 'पुत्र प्राप्त करा
व बह साधनों में भा पारगत हो चुकी हो । ईश्वर की
'सहायता व सम्भृत आवश्यकता न पड़ेगी ।

मानता—(कुछ झँकते) मान बदल-जाँ, रुपा कर विवाह का
कुछ दज तो सुगाइये ! (पति क मुह की शार देख कर

आश्चर्य स) अरे ! आप सदाय क्यों हैं ? शरीर तो ठाक है न ?

माधव-शरीर को क्या होता है ? इस विवाह में शुरू से ही अमंगलों का सामना करना पड़ा है। मेरा हृदय तर्फी से धक्कू का रहा है। वग आशकुनों का विचार कर जिस सदैव सशक्ति रहता है। अदृष्ट में भीर भी न जाये क्या क्या दाना पदा है। (निश्वास डालना)

मातृनी-(निश्चिन्त हो) ये अमङ्गल और अपशकुन की कौन से हैं ? कृपया कुतू तो सुनाइय।

माधव-सुना, एक तो अब यहाँ से बरात रवाना हुई, मार्ग में ही गेयकर दृष्टि सप आड़ा फिर रास्ता बद गया, धूमर जयपुर में घुसते ही सूत्री जकाड़ियाँ सामने आई। तीनर दरवाजे में घुसते ही राम नाम सत्य है, व चाप के महित एक मनुष्य का शर मिला, चौथे विवाह के अग्रसर पर मोहन व मन्त्रक पर मोर घाँघते समय सामा को धीक हुई। और पाचधे स्थल वस्तुयें गुम हुई।

मातृनी—हा ये बातें अशुभ ही मन का रोदित करने वाली हैं 'अमंगलान्' स्वरूप है। हाँ, खर्च का खर्च कैसे गुम हुई।

माधव-मोहन के हाथ में एक तो पाँच हजार की दोरा जड़ी अंगूठी बड़ी गिर गई। दूसरे १० हजार की एक कण्ठ गा 'मोहन' से काट टग ल गया। इसके अतिरिक्त विवाह

में लगभग १० हजार रुपये खर्च हुये सा अलग । व्यापार में भा कुन्नु गडबड़ी नजर आती है ।

मालती—माहन न दोनों चीजें कैम लार्दी ।

माधव—अगूठा क विषय म ता में पहिल दी कह चुका कि बच्चा हा ता हे, अ गुनी स निकल कर वहाँ गिर गई । वगठा काई मनुष्य मेर नाम से मांगकर कि तुम्हारे पिता जा मगयात है, लेगया । मोहन अर्द्ध निद्रित अवस्था में छाने क कारण उस ठीक २ न , पहचान सबा । माहन कहता है कि यह मनुष्य उन्का मामा बग वगठा ल गया है में गिरा में था सा उस अर्द्ध तरह नहीं पहचान सबा, नामा जा ता नहीं मालूम हात थे पर यह मनुष्य उन्का समाग हा अवश्य था । उन्की धात्री भा कुन्नु २ मामा जा स ही मिलता जुलता था ।

मालती—(सिर पाट गेकर) हाय ! यह ता बहुत बडा हाति हुड । उन्का नाश हा । मेर भाई-का यह काम हर्गिज नहीं हा सकता । यह ता जयपुर क हा फिला गुण्डे ठग का काम है । जयपुर क ठग प्रसिद्ध हात है ।

माधव—गुंडे का क्या काम हे, यह सब हमारे भाग्य का फैल और दुश्मन का प्रारम्भ है ।

मालती—क्या उसका सरकार ने भी कुन्नु पता नहीं लगाया ।

माधव—सरकार में इत्तिना करने स न जान किम किस की इज्जत बिगड़ता, आफत, आती सा अलग दी । इस क,

।मया चार गता लगन क लिय गाडे ही चागी, करता है ।
इतना बधाती का साच विचार मनमार दिन मसास रह
गया ।

माननी-(यात उदक नि श्वासा डाल)। खेर, जिहास फेरे,
मान-मान, आदर-सत्कार आदि का हाल भा तो
कामाहये ?

माधव-अदर-सत्कारना, यथाशक्ति अच्छा ही हुआ। आपसी
जाति व रीतिरवाज मानमान ता प्रसिद्ध हो है । कोई
विशेषना नहीं था, हा फेरों (भावरें) का कुछ दृश्य अत्रण
कर मन्ताप करा ।

मानना--हा हा, फरमाइया। मुझे भी सुना की इच्छा है ।
(प्रसन्न होना)।

माधव-जिस समय पुणेहित जा विवाह का, अथ विधियां
पाएट रहे थे, उस समय 'माहा-माहिनी' की जाडा आ-
नन्द स मित्रा देवा का गोद में विश्राम ल, उसका भूत में
भूत रहा था । उन्हें क्या मालूम था कि "आज हमारा
पारस्परिक मित्रतावा का सम्बन्ध स्थिर हो रहा है । एक
दूसरे के सुख-दुःख-चिन्त्याइया रहे हैं । पुरादितता
माता दुलहा, दुलहिम, उभर माता पिता सखी-प्रति-
निधि स जात पहचाने जा। वैदिक मन्त्र, दुलहा, दुलहिम,
उभर माता पिता का वाजना-उर अवसर गर कल्या-
वश्या है, उभर कुछ अस्फुट शब्द गाने से सदा कर

श्रीर उास फवल मम' शब्द का उच्चारण करवाकर अगले वक्तव्य का इतिथी' कर रहे थे। गाथा उनके हर्ता, कर्ता विधाता सब कुछ उहा हों।

मालती-हा फेरा का हाल कहिये ?

माधव-पुराहित जी ने, जिस समय 'माहल-माहिनी' का मन्वा धन कर कहा कि "उठा सप्तगदा" के लिये तैयार हो आओ उस समय माहिनी तो घबराकर गिर पड़ी। दोगा चौक पड़े। फिर अर्द्धनिवृत्त अवस्थाम ही माहल ने पांडित जी से कहा, 'महाराज ! 'सप्तगदा' ! सात पाँच धाली की तैयारी कैसी ? हमें उसमें क्या करना है ?) पुराहित जी ने हसकर कहा 'श्रीजी कु अर साहेब ! सप्तगदा' का अर्थ सात पाँच धाली की तैयारी कैसी। सप्तगदा का अर्थ 'फेरा है फेरा')

माहल ने उसी स्थित में फिर कहा-वहीं महाराज ! मैं 'फेरा' का तैयारी नहीं चाहता मुझे पैरा खाने का शोक बिलकुल नहीं है यह प्रशास्त्र सुन हँसने लगे। माधव-यह विधि भी पुराहित जी ने किसी फदर (प्रकार) पूरी कराई।

मालती-(खुब हसकर) नाह ! यह तो खुब हा बतार रही।

माधव-('उठाने हा (प्यारा ' यह बहाल और हँसने का विषय नहीं है। यह फवल हम विचित्र देश भारत में हमारे अवपत्ता और हाग की भूमि का एक बाड़ा (छाटा)

मा भोगात्क मउगी. (दृश्य) है। “बाज-विवाह” में
 ऐसा हाग स्वाभाविक न है। हमारे यहाँ की यह चरम
 सीमा है ! रुद्रा और द्रुपदि । वा काराणक-दृश्य है। देखें
 आगे क्या क्या चलता जाय है। हा, (निश्वास) अस्तु
 अथ रात्रि अधिक गह नाग जाहिय।
 मालती-जा आया।

(गटाक्षेप) द्वागसी

(लङ्का दूमरा, दृश्य तीसरा पूर्ण)

“मोहन-मोहिनी”

(एक तीसरा-दृश्य पहला)

रुद्रा-जयपुर में सठ तारायणचन्द्र का निजीबाग,

जन्म सुन्दर २० वर्ष की माहिना धेनु बल

भूषण पण्डित किया अकली घूम रहा है।

समय विवाह के ५ वर्ष के पश्चात्।

साथैरान ५ बज के

लगभग।

माहिना-(एक झगर अम्फुट अघखिना बलियाँ पर बैठ जा
 का रसपान कर पुन उठकर स उड़त लये देख उस को
 लक्ष्य कर) अरे, स्वार्थी ! तू कितना नीच है, कि एक
 बला का रस चख कर तुरन्त हा उसका त्याग कर देता

है। व्याधय कितना श्रम है। कार्य सिद्ध हो चुकने पर तू वैसे फूटी आँख स भी नहीं देखता। 'प्रेम किस कहते हैं? यह तो तू जानता ही नहीं। गाँव में फँस रहा है, तू क्या जाने? हा, तू भा है तो पुरुष जानि का म? फिर लगमें और तुझमें अन्तर क्यों होते लगा।' हा, पुरुष तो प्रायः सब ही ऐन हीन हैं। (घरों से आने पर एक आँख के वृक्ष पर सुन्दर पुष्पित एक माधवा लता का देख [जितना हुआ। उसके पास जा उस लूकर] प्यारी बहिन जिनिक। मुझसे तू लाख दर्जे श्रेष्ठ है जा धृष्ट, यथा शान सब समय आने प्यारे-प्रिय पति के गहों में गलायदिया डाल मुद्रित मन सदैव मेरा ही खड़ी रहता है। साथ ही तेरे हृदय धन प्यारे का प्रेम भी परम प्रशंसनीय है जा अपना प्यारो के पवित्र श्रम में अहर्निश आसक्त रहने हैं। धिलग होना तो माना जानते हो नहीं। अहर्। इस सब प्रिय प्रेम को धन्य है। मेरा विवाह दूने गाँव वर्ष होगये-एक तो हमारा पारस्परिक व्यवहारिक प्रेम सम्बन्ध है और एक इशका। मेरी समझ में हम अनुग्रहों से तो इशका जी, बन ही सकल है। हे ईश्वर। यदि तू इसा यात्रा में जन्म देना तो मेरा कैसा आनन्दमान्य होता। हे शुभ जोडा। तुझे धन्य है। (नत्रों में अधुनात होना) [इनमें में सु-गधुर करुण से गायन का आने लिका हुआ अंश सुनाई देगा।]

नर्तन करवाता—बोला चाहे न बोला, दिन आराम फिदा हैं। तेरा
अन्तरा—मैं तरी गली में आया तरे इश्क न सताया ।

बढ़ागम होचुका हूँ ॥ बोला चाहे न बोलो ॥१॥

मोहिनी—अहा ! कितना मजबूर आवाज है । लय में कितनी
लज्ज है । गाय में कितनी गम्भीरता और हमर्मी जगा-
गायों के चित्त को भड़का देने का भड़क है । शब्द आ
के ठग से ना काइ इधर ही आता दिखाइ देता है । (आग
पुन सुनाई देना)

तरे इश्क में जो प्यारी, बफ़ारी रगाइ काली ।

जागी तो बाचुका हूँ बोलो चाहे न बोलो ॥२॥

मोहिनी—(स्मृत) अहा ! इस श्रृंगारिक गाय का कितना
अच्छा भाव है । (पुन कुछ पास सुनाइ देना)

तरे गले का हरषा, गूना हजार फूलों ।

गलहार बन चुका हूँ बोलो चाहे न बोलो ॥३॥

(मोहिनी) खुद-सायान-अपनी प्यारीके अच्छे गलहार बने ।

(मोहिनी का श्रीरक्त आगे बढ़ा गय स बहुत पास , ,
सुनाइ वग)

तरे इश्क का कटारी, मेरे हाथ बलजे मागी ।

जड़मी तो हा चुका हूँ बोलो चाहे न बोलो ॥४॥

(मोहिनी का आगे बढ़ा और सामने ॥ अपने ही बाच-

मान करीब का अच्छेला चाल से आते दिखाई देता)

मोहिनी—(स्मृत) देखो ! ये निहट अंशुक मनुष्य भी कितने

सुखा है। जितना पाया, उतना मैं मन्ताप मान आनन्द उठाया। सुन्दर भी है पुष्ट भी है, मन्तुष्ट भी है और यतिष्ठ भी है। (कर्म का नाम देख प्रकट) क्या कर्म मिया, क्या हाल है? कौनसा मरानिया गा रहे थे? और कहाँ मैं था रहे थे?

फर्माग—(मानो माहिनाका देखा ही नहीं ऐसा भाव यता और
इधर उधर देख) अरे, जीन माहिनायाइ, आहा, आप हैं
जी साहिया आप हैं । मैं तो थापका देखा ही नहीं ।
यै, वाइ जीन आपने तो ठाँक दी समझा, 'मरलिया'
रन के गाँव को ही कहते हैं । इस गाँव में भी हजरते
आशिक साहिय, अपनी माशुका क रज में रो रहे हैं ।

भोहिना-हाँ, यह तो कहा कि कहा से आ रहे हो ?

कराईम-मे तो हुजूर का हवेला ही था आ रहा हूँ। घोंडे की जाही जोत हवेला गया था, मोना था कि नगर हुजूम हा ता कुछ सैर कर लाऊ क्याकि घोंडों को भी बंधे २ बहुत दिन हो गये हैं, लेकिन यहा मालूम हुआ कि आप बाग में तशरफ ले गई हैं। मैं भी हुजूर स पूजन का नियत स यहा चला आया।

मोहिनी-अब क्या किया। गगर मियाँ क्यों भ्रम । आज तो तब
 यत बुझे डीफ नहीं है। इसी से आज कहीं भी घूमना
 जा का दिल नहीं है। तुम जाना। घाडा का खान

बराम-(वृत्त चिन्तन हो) हुजूर का 'दुश्मता' की नगित
माशाद हा । (इना कह जात क यज्ञाय माहिता का
आर देगता)

माहिता-क्यों ? क्या जाना नहीं चाहत ? अगर तहा जात
जात ता यह गाता एक बत फिर उभा लगमें गात
सुनाता ।

करीम-हुजूर । यह थार २ नहीं गाता जाना । जयकिन्ना की
जुदाई में दित बेरगा हा जाना है नव दुली दित की
पूराग आवाज आय हा आग निजल गडना है ।

माहिता-(हँसकर) ता क्या तुम मा किन्ना की जुदाई में गर
रहे हा ?

करीम-(हँसकर) हुजूर ! इन्ना जगद ता मेरा चायल
दित हा के बनना है । जरा नहीं द बननी ।

माहिता-किन्ने घायल किया हे ?

बराम-गाफ कमिये । उम्क मालुक जरा भी जरा निताऊ भी
कई आफतें बठाऊ, अगर-बाइ जात पाय ता मुह
कहा छिगाऊ ? और गडे होने का मा वही जगद तक
ग पाऊ ।

माहिती-तुम एक बार जरूर बगाऊ करे ।

बराम-फज कर कि (हँसकर) यह अगर खुद आप हो हा
ता गराज ता ग हागी ?

माहिती-(हँसकर) गाइ बराम " तुम हमार पुस्तैरी गौदर

जाग स चाँटा मार धक्का दगा उसका गिरना पत्थर
की चाट लगी स भर फटगा ग्यून का खरना उदाश
हारा] माहिना का पुकारना अर काड है ।

करीम—[उन्हा दशा में बड़बड़ाता] प्यारी मुझे यह भा मेजूर
है । चाहे मार डाल पर अर्बु 'तालु' हाथ ता भर
मीन पर रख उन्हें न हटा ।

मोहिनी—हे मगवान्, यह क्या हुआ, [दगा स द्रावित हा,
उसे उठाने का मुकता, इनन म-मठ के मुगम क
लहके हीराजाल का आना-]

हीराजाल—[आश्चर्य स] क्या है ? माहिनी वाह क्या ? क्या
अभी आपने ही किया का पुकार था । यह वीन
गड़ा है ? यह खून कैसा ?

माहिनी—हाँ, कराम कहीं स भूमना भामता इधर आ
रहा भा, वहाँ ठोकर खाकर गिर पड़ा माथ में चाट
भा आई है ।

हीराजाल—[धीरे स] ताग व माथ-पत्थर की चाट लगी था
और किमी का ? [कराम व पाम जा] उसे हिला
कर, करीम ओ कराम !

करीम—[कराम का हाथ स आ हीराजाल को देख भौंचड़ा
'वा हा] कौन कुत्तर जा है ?

हीराजाल—अर वहाँ क्यों गड़ा है ? यहाँ कैसे आया ? गाड़ी
पर बाँध है नहीं । यह खाला चढ़ा छूटी पड़ा है ।

घाटे अलग भड़क रहे हैं। अर्थात् २ एर लड़क का चाट भी आइ है। आप यहाँ नब्बाब बन गडे हैं। गामल यहाँ का।

बराम-[आश्चर्य म प्रबुद्धाकर] हैं सुखार। मैं गहाँ पर बाई माहिनी का मुर करने जाग जाग बी पूठा आया था यदा चाट खाकर गिर पडा, यह भला कुह-[मलाम कर माहिनी का एक बार मल्लुन दृष्टिसे देख प्रभ्याग] मोहिनी-[हारात्ताल की आर दल] कुंजर साहेब, मर पुकारने म आपका कष्ट पहुचा, इसकी क्षमा चाहती हूँ।

हीरात्ताल-कष्ट नहीं कष्ट किस यान का ? और क्षमायाचना की क्या आवश्यकता ? मैं ना आपक पीछे नन, मग धनम मदीव कष्ट महीन का तैयार हूँ। किंतु आप कष्ट दन का उद्यम हों तब ? हमारा ऐसा भाग्य नहीं ? आप तो-अपनी ही एक मुमलमाग कोचवान गुलाम का कष्ट देना ममन्द करना है उसका कोई क्या करे। अर्थात् २ भाग्य, इस कोचवान का धन है जो आपक प्रेम का पात्र बना ?

मोहिनी-आज आप य कैसा बातें कर रहे हैं ? सब नेचारे कोचवान को और मुक्त का व्यथ हा जाँत्रा लगा रहे हैं। काइ सुनगा ता क्या कहगा ? आप सभ्य है, आपक मुह म ऐसा बात शोभा नहीं देनी। मैं उसक साथ जा कुट्ट किया-एक मालिक का अर्थात् नाकर क साथ इस प्रकार

का स्थित में जा कुतू करना चाहिये, वही किया, वन पर
भा यह लातु । हे भगवान् ।

पारातात-तांनुत । आश्चर्य । अज्झा वत्तं वयं किया । (नाते
न) एक शायी ही श्रद्धा (तुच्छ) गुलाग स' इत्यादि के
गायन सुनाने की आशु मित्रन (प्रार्थना सुशामद) करना
हम स्वयं बातें करना । मुक्त मुक्त कर छाने न लगान का
यत्न करना, यदि माजिक हा तो आप हा सा दयालु हा ।
(हास्यः)

मोहिनी-हमने क्या है । शीर्षा कुतू कहना हो ता कह डालिये
वाका गच्छिय । मालूम हाता है आज ता-आपन मुक्त
'बाडा' बदनाम करना का बाडा ही उठाया है ।

ही०-‘बदनाम’ शीरे यह क्या कहती हा ? म'बदनाम कर ना
ओर आपका । पर क्या आंखा न देखा और कानोंस सुन
भी क्या भूठ हो मजता है यदि ऐसा ही होता हा ता में
अवश्य भूठा हैं । मन हा म'समके सो, देव । शीरे मुक्त
हा बाता न क्या करता है ।

मोहिनी—(कुतू लज्जित-सी हा सोचकर स्वगत) इन दुष्ट से
भी शत्रु विस प्रकार छुटकाग हा । एक विपत्ति जाहता
अभी कुतू दर न हूँ और यह दुमरी जाह । कुतू स निजाल
अब खाइ में पटने का तैयार हो रहा है । मेरा यह कप
और धोवन खुद मरा हा शत्रु हो रहा है । वर के चिराग
से परका ही आग जल रहा है । हे ईश्वर रक्षा कर ।

[प्रगट] अच्छा गान लीजिये कि मैं हा सब प्रकार स
दापा हूँ अब आपका क्या इच्छा है ? साफ़ रफ़्तारमाय ।

हो०—क्या फरमाऊ ! मैं आपने इस 'प्रेम-गायक' में 'दाल'
भात में मूसरचन्द हा आधमका ओर रँग में गढ़' बिधा-
इस अपराध का क्षमा ! और जाने की आज्ञा ! अच्छा !
[जान-चाहना]

मोहिनी—[आग बह हाथ पकड़कर मुस्कराकर] अजी, जरा
ठहरिये ? सुनिये ता महा ! आग ता रुट हागये ।

हो०—[कुछ आवश] रुट ! रुट क्यों न-हाऊ ? आपन प्रेम के
प्रतिष्ठा का अपन सागर ही उस स्थित में खुश भा रुट
क्यों न हाऊ, आप जागता हुई भा अनजान क्यों पग रहा
है आपस मेर-भा की बीनसा बात बिदित नही है ? मैं
आपके लिये मान भर स मरा जा रहा हूँ । दुतिपा, छारा
बगद हुई मेरी प्रगभित्त की प्राथनायें आपन शर्थागत की
प्रेम पात्रकायें निज पैरों तले कुचल मेरा शयमान किया ।
मैंट में मनोर गजर व मेजा हुई मेरी धम्पुओं का, आपन
तिरस्कार किया । और एक सुन्दर समाप्ति, दस आनदान
व धाम्य प्रमी युवक का त्याग, एक भीम मुक्ताम मुनका
मान को दिल दिया । और आपन २ माय ।

मोहिनी—प्यारे ! आपका खयाल गलत है । आपकी आशय
निर्मूल है । हाँ, अजयतन पहले पहले आज्ञा हा उचर

जा कि गुलाम हा है-मग्न भाव स हा उपहास कर
छेडा, उसी से उसका माहम बढ़ा और मेरा इस छाटी
सा भूलने हा वह काड लडा कर दिया जा दब चुक है
मुझे देख मेरा अन्य बाहना का इन चान की शिखा
लगा चाहिये। मैं इश्वर को माझा ठेकर कहती हूँ कि
मे पृथनया निर्दोष हूँ। और यदि आप भी न्याय पूर्वक
इश्वर स डर, कहना चाहेंगे तो यहा बहेंगे जा कि इस
समय में कह रहा हूँ। अन्तु-“वाता ताहि विचारि दे,
आग का बुधि लय । मेरा पिछला अपराध क्षमा कर
अब मैं आपकी सेवा में हर तरह स तैयार हूँ। जो केवल
व्यवहार क डर स आपका विषय का पिछली घटना
घटा थी।

हीराजाल- (उत्कटित हो) ता प्यारी, शीघ्र मेरी इच्छा पू
करा। किता हा दिना क प्यास, इन बातक क
तुम आग प्रेम-रुगी स्वैति जल का दाग-दाग (अ
लिंग क लिये बढ़ना, माहिनी का पाछे दटना)
माहिनी-हूँ, हूँ, आप अवसर कुअवसर का भी ध्यान छोड दे
हूँ, इस समय यदि कोई अवस्तातु आ निकल ता अ
धी और मेरा इज्जत का क्या हाल हा-? जब प्रेम उ
हा गया है ता बहुत अमर है।

हीराजाल-हाँ प्यास, यह है ता ठीक। एक बात और क
चाहता हूँ, वह यह है कि “आप ससुराल का

ता आप जानना हो है। आप व पति कैसा है यह भा
विना म, छिया नहीं है। ऐसा स्थिति में यदि अपन दागों
हा खूब द्रव्य का दूर देशमें चले चलें ता इस जिन्दगी और
यीश की कंसा बहार हा ? इस विषय में आपकी क्या
भाव है ?

माहिनी—प्यारे ! मैं भी यही बात पहिल ही से सोच रही था।

* मैं प्रथम हा बंद चुकी हूँ कि 'आप की सेवा क लिये हर
तर्ह नैवार हूँ, अनुसर मिलते ही निबल चलूंगा। उस
तर्क म तो उद्धार हागा। किंतु यह भी साथ ही प्राधा
है कि आज की उम्र उपदासका घटाका गुप्त रहियेगा।'

होगाना—प्यारी, विचार अत्युत्तम है। पर साथ ही तुम्हें
यह चेतावना भी दिय देता हूँ कि 'अगर तुम दगावजा
का या प्रेम विवाहमें आमाकागीकीया अमाय बताया ता
मैं तुम्हारा सब भण्डाफाड कर दूंगा। मुझे आजका घटा
के अतिरिक्त तुम्हारा बंद गुप्तवाते विदित हैं, ध्यान रखता।

माहिनी—(स्वगत कुछ सँचिकर मेंगें और गुप्त बातें। झूठा
कहाँ का घबरावो चकमा दा भी खूब आता है खलना
प्रेम रस) [प्रकट] नहीं प्यारे, ऐसा बदापि न होगा।
आप पूर्ण विश्राम रखें।

हाराठ—(स्वगत—“मय बिग होहि न प्रीति”—अब आइ गहपर)
([प्रकट] ता विश्राम क लिये मुझे प्रेम बिन्द स्वरूप निज
वामनाश्रयगुना की गूठा और पर चुम्बन प्रदान करिय

श्रीर मेरी अ गूठी आप धारण करिये । इस समय में श्रीर कुट्ट नहीं चाहता । (मोहिनी का उत्तर क पहिले आगे बढ़ उससे) अ गूठा ले आता अ गुनी में पहिन आता अ गूठा उसका कोमल अ गुनी में पहिनाता श्रीर खुम्हाला की तैयारी करना इन ही में वहाँ पास ही म मधुर बैठ स निक्ले इस गद्याश और पायजेत्र का शब्द सुनाई देना—

गद्याश—“परिधक, लाघघाग ! लाघघाग ! नू पाँव मग धरो ।

आर्गसिपूण मार्ग है, कुट्ट लाच मग फस्त ॥”

हीराजाज—(घबराकर आश्चर्य स) [स्वात—क्या बिसा ने मुझे हा चेतावनी दी क्या हमारा सापण—भेद काद जान गया ।) प्रकट—प्यारा ! स्मरण रखना जाता हूँ । (शीघ्रता स प्रस्थाग)

(ड्रापसीन) पटाक्षेप

“मोहन-मोहिनी”

(अङ्क तीसरा, दृश्य दूसरा)

(स्थान लाधपुर— रुठ माधवप्रसाद का कमरा मोहन दाण शय्या पर पड़ा है पास ही माधव मानता बैठे हैं)

समय विताह क्र ५ त्रय वाद, दिग् १० प्रजे

माता-(शरीर पर हाथ फेरकर प्यार से) बेटी ! कैसे तबियत है ?

मोहिनी-(मन्द स्वर में) पूज्य माता जी ! " मेरे-सारे शरीर में दर्द हो रहा है जामों जल्दी-० चल रही है, श्वास जल्दी-० चल रहा है जिससे कि बन्धन में-भयांक बप्ट होना है । मुँह में कफ व साथ ही बार-२ खून भी आता है हा ! क्या करूँ और क्या न करूँ कुछ सन्मम में नहीं आता ।

माधव-नातः । राग है-बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा, ताभा-० दक्ष वैद्यराज पर इलाज बन्द करा, आज बड़े डाक्टर सा० का इलाज शुरू करायेंगे । लगन साहस का बुलाव भगा है, उ बड़े भगी, दयालु, पराएका और सज्जन हैं । उका हाथो इजारा असाम्य रागी अच्छे हुये ह । ये अभी आत दी होंगे ।

माधव-पूज्य पिता जी और माता जी ! अब मुझे भीषण की कुत्र भा आशा नहीं है । टाफटों का बुलाव व कुत्र भा आवश्यकता नही । यह केवल मिडफ्रना मात्र है । आपता मुझे भीना का प ठसुनाइये । म. आप कागोंकी अधिक बिना तब और भवा नहीं कर सका, यह मेरा अग्राम्य है । इश्वर न प्रार्थना है कि वह जन्म जन्मांतर आपके समान-दा माता पिता प्रदों कर । पिता जी

परचट बदलवाइय । आहा, बडा वर्द है ।

माधव--(आलों में भासु गर) बदलवाना हूँ यटा । (हाथ क सहारे दुमरी आर लिटाग)

मोहन--(चेसुधि की दशा म) पिना आ पिना जी । अरे, उम ने मेरा अगूठा निकाला । मामा कठी मागत है । अरे, सतगदी, मैं फेंगा-पेरी कुछ न साक मा । अरे मेरी पुस्तकें, माहिनी अरे आ डाइन । क्या छेड़नी है ? अरे । नहीं नहीं । हाथ राग । मेरा प्यारा । क्या कहा ? मुझमें तुझे सुल नहीं, मैं ज़ाटा हूँ-दुबला हूँ-अशक्त भा हूँ । हाँ , अन्ना ना लमा " हाथ राग ।, वर्द है, (गौकर का प्रवेश)

गौकर--लठ साइय । दागा डाफटर मारिये माहर स बाहिर प्यारे है । कहा कि "सठ साहेब का हमारा सजाग दा । हमारे आने का बानो ।

माधव--अरे, कहाँ है ? चल मैं चलता हूँ । (बाहिर जाकर हाथ जाड़) बसगावर जे गापाला जी की शाध, गधारिय, आपक बेटे की टाखिये उम देखने की कृपा करिये ।

अमेजमजन--उन, सठसाहेब, हमारा चेड़ा यहा बैस आया ।
[आश्चर्य न] हम जय बाहर गजला यह घटुन टाक डा । [सठजा का कुत्ता सफर कर ललित
हा छोटे दशी डाफटर का उहै ममके न का

बहाव उ। का इतिहास में समझाया]

सज्जा-गण होंगुड, अन्ना मठ साहेब हम मरीज को
दखना मंगटा है। नला।

सठ माधय-प्राग्य, इतर पथाग्य। [माहा ने नाम जाता]

सज्जा-माहा का ताडा दखना, फिर हाथ छोड़ आया जाय

दखना व पथात् 'स्टायाम्काप' [ग्यर्की मत्ता विशेष]

म ज्ञाना का ज्ञान कराय अन्ना सग ज्ञान कराय क

पथात् उठकर कुर्मी पर बैठा। [छाटे डाक्टर से]

गिरा, गेह डेजर्न, यू० मा०

छाटे डा०-[कुत्ता ज्ञान कर] गम मर,।

सज्जा-[मठ म] मेंठ जी, इसका दो बाल म 'गार्मिनीन

दाहाई' है [सय गग विशेष] उसी में दखन

गिमे। गि। हो गया है। अर तुम क्या चाहा है?

सठ माधय-[मर्जा साहेब का एक लो का ताडा व] हुजूर,

मग यथा किन्ना तरह बचे ऐसी कहा हो। मैं इस

के लिये एक हजार रुपये दान के तैयार हूँ।

ज्जा-आ मठ साहेब, तुम हमको बहाव देर से याद किया

है। अब गग बट गया अन्ना हागा ना मुमर्ग। है।

माधय-बहाव करगा हुजूर।

न-अर! हम तुमका दो बाल पेशेंट बोला कि माहर्

बहाव कमजोर है। उसका शादा इट गी कमटा ठमर में

पर डेगा बहाव, युग हुआ है। यह शायद इसी से हुआ

है। इसकी मेमसाहेब श्रीरट का इसका नाम हाता श्रीर
भी जुग है। उनका हटाडेगा मुनास्मि है। हुगा उम
चकूट (चक) हमारी घाट नहीं मागा, उनका ही है
सब गटाजा है। इस चकूट इसका श्रीरट कहीं है ?

सेठ माधव-हुजूर, पीअर है।

सर्ज- (छोटे डाक्टर से) हाट इज दि पीअर ? डाक्टर
साहिब !

डाक्टर-सर, उसके बाप क घर।

सर्ज-यस, सेठजी, बिना रात्र मे !

सेठ माधव-हुजूर, तीन माहस।

सर्ज-डो साज पेक्टर हमारे कहने से उसे क्या नहीं हटाया।

माधव प्र०-हुजूर ! इसका माँ हटाया नहीं चाहता था और
उधर डेनवी मा रपता नहीं चाहती थी।

सर्ज- (आश्चर्य से अम्फुट स्वर में) आ, उमफुन आर डो
इरिडियन गडरस (मोट दस्तकर) ओ सठ जी। हडेड
रूपास। मो कपय हम नहीं चाहता। गिडर भी सिफ पटी
रूपीज आनूना-सिफ मोलर कपये हम डा। पाच कपये
हमारा छोटा साहर का डा।

सेठ माधव-हुजूर। मेन य खुशी से दिय हैं मजूर फामाव।

सर्ज-हम रिमिट नहीं चाहता, फीस चाहता है। (अर्डीवेस,
वर) जट्टा वगैरे डेर हाहदा है। (उठता)

माधव प्र०- १६ रु० सर्ज-को पीर, पू रु० छोटे डाक्टरका दे।

गप्रता से-हुजूर, बघो का इलाज ।

सर्जंग—(खड़े खड़े) बिसा उड (चैत्र) हर्षीम का बोलो ।
हमारा भूटा साहेब का बाला, हम इलाज करवा नहीं
मागटा ।

माधर०-हुजूर, सयका इलाज करा चुके । हजारों रुपया गमा
चुके । अब तो आप ही का भयला है । (रुदा करना
हाथ जाड़ना)

सर्जंग—(चलते हुये ही) सेठजी हम झूठ बोलना नहीं चाहटा
ढाणा (धोका) देना नहीं मांगटा । अब हमारे हाट को
बाट नहीं हवा कागसर हो सकटा नहीं । मजबूर है । सेठ
जी, अच्छा गुडिबिनिंग । (टोप लगा मोटर व पास
गहुँचना)

माधर०—(हाथ जोड़ पुन शीजीजी से) सेठ साहेब का तर्जों
में आखू मरे कहता हुजूर । अब आपकी राय में यह कब
तक जिन्दा रह सकता है ? कुछ समय के लिये दाश गा
आयगा या नहीं ?

सर्जंग—(मोटर में बैठ) सिफ आधा घंटा जिन्दा रह सकता है ।
हो चार गिण्ट को दाश आ मो सकटा है गोर ही गा ।
अच्छा गुडिबिनिंग !

(ड्राइवर का इशारा करना, मोटर का गम्थान)

[गटाक्षेप]

(अद्भुत तीसरा, दृश्य दूसरा, पूर्य)

इस स रक्षा का उपाय ! (कुछ माच प्रमत्त हो) कूर्तार्थ
 भातरी जेब में हाथ डाल) है ह अउश्य है । (एक झट्टा
 सा शीर्षा निकाल उम प्यारम चुम्बता दे) मेरी सच्चा
 प्यारा चिरम(गनी-चिरशान्तिदायाग यहा है । [शीर्षा
 का जेब में रखना । फिर निकालता-क्या इसका घट्ट हटाय
 इसका प्यारमृतता पूर्णरूप से पान करूँ ? (कुछ माच)
 नहीं नहीं अभी नमथ नहीं है गार्जल माउधान करग घाले
 का पता लगाता चाहिये । [फिर जेब में रखता) बाग में
 धूमता, दूढ़ता, १ मिलने पर क्या करूँ —चलू उस
 निर्मल होजक किनारे बैठ जिस का कुछ शान्त कर । होज
 व किनारे जा कुछ दूर बैठ, पैंमिलम एक बागज पर कुछ
 लिख लपेट जेब में रखता) अब क्या करग चाहिये ?
 यदि मैं उस माउधान करग घाले का पता न लगा सका
 तो मेरी आत्मा का शान्ति गति , (मन में खूब
 शांति और भावस का अनुभव कर) अरे , उस का
 आह्वात करूँ ।

हे माधवा करग घाले । [लाघनी]

“तुम आशा प्यारे, शका शीघ्र हटाओ ।

दा शान्ति दान दुख मेरा आप घटाओ ॥

(लताकुंतल की ओटम-नाटक खेल में गदगद)

प्यारी तुम चित में नैक नहीं घबराओ ।

.. हम आव । तुम मुख चन्द्रकान्ति दिखराओ ॥

[हास्य और नूपुर पदध्वनि]

मोहिनी—(शब्द न आता पर शायदा मैं जाग जाऊँगी ही मैं
दो सुन्दर आभूषणा युक्त ठोकरा मागकर हँसते हुये
दा-युरनिया का आता)

दोनों युरनिया—(हँसकर) लो प्यारी माहिना । तुम ने एक
का आह्वा किया और हम दो जा गये । दृष्ट ना ।
दोआमा [माहिना का यथायक्त कथाम और हारालालि
का स्मरण आता]

माहिना—[दाता का पाहचान दौड़कर गले मिलता थावा मैं
आसू का धारा बहता] और, तुम दाता क्या आइ ?
मेरी चम्पा चमेली उठिगा ?

चम्पा—तुम ने आह्वा किया और जमा आइ ।

चमेली—[हँसकर] पर बड़े ही दुख का बात है कि एक प्यार
न आया और दा प्यारिया आइ ।

मोहिनी—[हँसकर] और माता पर जादा मागने का इशारा कर
तुम अब भी गदगद हो रही हो, मुझे जब मैं तग कर
रही हूँ । सन्न कहो ।

चम्पा—[हँसकर] और [लिपटकर] प्यारी चम्पा माहिना,
बहुत वर्षों मैं मिलना हुआ ? कहा गमन ना हो ?

चमेली—गच्छा, यथाथा कितने वर्षों मैं मिलना हुआ ? और
आनन्द में तो हो ?

माहिनी—मिलना का पात्र वर्षों में हुआ ? और शस्त्र और

आन्द क प्रिय मे मुझे क्या चाह ? वहि आरु
तुम दाँतों आर ससुगल मे कर आइ अपना कुशल
करा ? दाँत प्रसन्नता मे ला हा ?

चम्पा—बाइन इतने वर्षों तक कहा क्या रहा ? क्या तुम्हारे
पिता जी न तुम्हें बाँच गे नहीं बुलवाया ? इसका क्या
कारण है ।

माहिनी—एक तो विवाह के बाद मे हा कुछ खटका भी रहता
है । दूसरे मामल मदेन ।। अपना नाम रखा पसन्द
करता हूँ तानर गति गाय कर ही रहने है अब भी
धीमा रह है हमस कहा रहता ही पड़ता है ।

चम्पा—ता ऐसा दगा मे तुम्हारे पिता जी तुम्हें लिखा कैसे
लाय और ससुगल गालान हा कैसे भज दिया ?

माहिनी—सुगता हूँ कि डाक्टरों के कल मे हो उन्होंने मुझे
यहाँ भेज दिया है । कहते हैं कि मेरे रहने मे य धीमा
रहने है ।

चम्पा—(हँसकर) ये निगाडे डाक्टर भी कैसे ? हा ?
भला देना ता नहीं कहाँ पुरुषों के पास श्री के रहा मे
भी पुरुष बागार हा मकता है ।

माहिनी—(हँसकर धान टाँककर) अरे ! तुमने कहाँ कहीं की
वान तो कुछ कर्दी और यह अब तक न बताया कि
स्वास्थ्य कैसा है ? क्या आइ ?

चम्पा—(हँसकर) स्वास्थ्य तो बंदस्तूर है । (चमेजों से खेत)

जाया) य तो कल रात को आइ में आया आइ हैं । सुना
कि मादना भा यहाँ है मा में आया कि मन्त्रि मादना भी
४, ५ वर्ष में आइ है । ताका की भट्ट का याग भाग्य स ही
प्राप्त हुआ है, अपना प्यारी सन्धि है चला मिल आये ।
महिल स्थला गइ ता मालूम हुआ कि तुम यहा हा । सी
न यहा हा चली आई ।

माहिता-(हम्बर और प्रेम न गद्गद हो) चलो अन्ध्रा
जिया बहिन, तुम दोनों का दल में बडा गमन हइ । माना
मरी मगा बहिन ही आगिलों हों । सन्धिया, मेर दुर्भाग्य
स मरे, मरी बहिन ता है । यहाँ मे नो, तुम दाता का हा
सगा बहिनो न भा बढकर प्यार करना हैं यह बडा अन्ध्रा
हुआ कि अपना ताका मिल गइ अपना ताको हा व सन्धि
लित हा जाने न दिा बड नामन्द बहार न गुजरेंगे ।

चमेजा-(हम्बर) पर यदि तुम याच में ही यहाँ सैर सपाटे
का खिजी गइ ता ?

माहिता-(चौककर) हैं, सैर सप टा, किनक मर्ष ?

चमेजा-(हम्बर) छिपाआ मत । बोले बनाआ मत । हमने
सब सुना और देखा है ।

माहिता-क्या सुना और देखा है ?

चमेजा-यहा अ गूठी का आदान गदा । और

माहिता-और क्या ?

चमेता-श्रीर चुम्बनातिंगन क आकनण का माग्मा श्रीर ।

माहिनी-श्रीर क्या ।

चमेता-श्रीर 'मात्रधा' वाले गायन में उसका चरण ।

माहिनी-उह मात्रधा पचाश का गायक बीन था ।

चम्पा—(हसन) वह गायक, जिनका गता जगान का तू
 दूढ़ दूढ़ कर परशान हो चुकी । गता न'पानकी । दुग्गित हा
 • जिनको प्यार सव्द न सम्हालन किया वह तग गायक
 प्यारानरे सामन खड़ा है श्रीर तरे रग म'भग' किया
 उसन लिय क्षमा मांग रहा है ।

चमेता-[हसन] वह तो प्यार नहीं प्यारा है । (वोगा का हसन)

माहिनी-[दुग्गित हा] क्या सच (जलित हा कुट्ट, घवगगर)
 यदि सच ? ता, है ? हैं ? हाय भगवन् ? घाग अनर्थ ।

चम्पा—श्रीर पगला, अलदद कहीं वा । क्या पतपका अनर्थ ।
 घवगगा मत बाहन । सबदा क घर मिट्टा चूक चूहे हैं ।
 धैर्य धरा । मन्त्र बात बहो । तुम्हारा बात गुप्त रक्षण की,
 हग प्रतिज्ञा करता है । तुम्हारा श्रीर हमारी बातें जब कि
 अपने परस्पर बहिर्ने हो तो मन्त्रों की बात एक ही है ।
 तुम्हारी वस समय की बातें भा कुछ अर्थ रखता है ।
 ऐसा मुझ मालुम हाता है ।

माहिनी—ठाक है । कहती हूँ सुनो । वे हजरत मुझे बातों में
 फँसा, डरा, धमकाकर मेरा सनातन नष्ट करना चाहते थे

मैं भा बच्चा का उसा व अनुमार बानों में फसा वह
मन्त्र बाग दिखलाया कि वह भी याद करगा। स्मरण
रहेगा। अगुठा अग्रग्य लक्ष गया। और चुम्बता रुगी
पाप कार्य से इष्टतर १ तुम्हारे द्वारा मेरी रक्षा करवाई
इस लिये उन और तुम्हें धन्यवाद है। जैसी उसक
साथ बाग की और व्यवहार किया यदि वैसा कर मिले
न करता तो इज्जत पर आ बगता। (अगुठा का दल) उस
कुत्ते का यह अगुठा। [अगुठी से ११ काल पैरों तले
गेर] धत्तेर कुत्ते की कह (फँसता है)

चम्पा-ठाक है यहि। यह पुरुष सगाज, हमसे देना ही
कुणयस और हम पर अत्याचार करता है। और समय
समय पर दापा भी हमहीं गिना जानी है उतकी आरवाई
अगुठा तब उठाया जाना गही। खेद ! महाखेद ! खैर-
अगनी लसुगज का भी कुछ मन्त्री बात सुगओ। दिख
बहलाजा। यह भा बतलाया कि पतिद्वय कैस है ? व्यव-
वहार कैसा है ? प्रेम का क्या हाल है आदि।

मोहिनी-गति तुम दागों भी अपना २ र्थाती बाते सखे दिन
स बहता स्तावार करो तो क्या मुझे बहता म फाइ उज्ज
हामरता है। वदापि गही। मैं भा तैयार हूँ।

चमेता-[हमकर] हम ता पहले ही बहता का तैयार है।

मोहिनी-ता पहले तुम्हीं शुरू करा।

चमेता-[हमकर] गही पहिले चम्पा कहें। कहाँ यहि।

चम्पा (कुँउ उदात्त हा) अच्छा बहिन यहा सहा । मेरा क्या
 क्या स सुनो ।

चम्पा-

गायन ।

जो न सखियों ! मैं न अपनी दुख कथा बतलाऊंगी ।
 तां कहाँ ? फिर कह व्यथा, शान्ति मनमें पाऊंगी ॥१॥
 हैं मेरे- पतिमेव के, सुन्दर अनेका नारियाँ ।
 तो हमारी पूछ कैसे, हो सके सुकुमारिया ॥२॥
 प्रचार करनी हैं सभी, छल, बल, कपट व्यापार का ।
 पति अथ वे, आशक्त हों, बाज़ार है व्यभिचार का ॥३॥
 (नेत्र में अश्रु)

हा, देव ने कैसा बनाया, शबलाश्रा का भाग्य है ।
 सहर्ता अनकों यन्त्रणाये, नर्क सा दुर्भाग्य है ॥ ४ ॥
 (रोकर)

इस दुर्दशा दयनीय को प्रभु, या तो जल्दी मेट दो ।
 अथवा सबों के प्राण पुण्य की चरण में भेंट ला ॥५॥

[मिथ्यान डालना]

माहिनी-प्यारी चमेली ! तुम्हें तो अपने पति का पूर्ण सौख्य
 है न ? कुँउ कहा ।

चमेली-(दुःखित हो) अच्छा सुनो ।

गायन-इमका मिले हैं वृद्ध बालक, बाकी सुना सी मैं लगू ।

कुँउ बान मन पूछो सखी, कहत हुय लज्जा मरू ॥१॥
 वृद्ध पतिस जो कुँउ सुख मित्र सकता है उसकी जलपा

पर लेता ही गया है, सात्वतो मेरी यही क्या है ।
 शोकावेग से और अधिक कदने में पूछनया अनगध हैं ।
 आशा है समा कगगा ।

(आखों में आश्रु भर रुदा गया)

चम्पा-हाँ, माहिनी ! अब तुम कहा ? तुम्हें तो हान्न विलास
 गग रुद्ध पति सुखोपभोग में मूर हा आगन्ध जाता
 हागा ? सुमरान में तुमने तो गाता डेरा हा डाल
 रक्खा है ? पाँच वर्ष ! अरे चापर बाग ! इतना त्रैश्व
 समय !

माहिनी-प्यारी माहिनी ! सुना । हृदय मजबूत कर सुनो ।
 गाया ।

“जब कभी मैं छँडती थी, माहिनी मैं पारहास से ।

फुल हा वे भिडकेते थे, रहिन हा बिम्बान से ॥१॥

चम्पा-अर ! इसल क्या ? यह तो किन्ना ? पुरुष का कला
 स्वभाव ही होता है । प्रेम चाहिये, प्रेम ।

माहिनी-“प्रेम तो था दूर कासी, ये बात परत जान से ।

कहने, ‘ठायन आगड’ गुजरेगी कैस रात से ?” ॥२॥

चमेली-अरी पगली ! बलवान् अपनी सब शक्ति खिना पर ही
 तो आजमाते हैं । हे ता बलवान् !

माहिनी-बल का हान्न सुना ।

गाया-“दश कदम चलता हुआ ता, हाफा ता में भरा ।

बाते ओको है बडा, मैंने सुना है जरा ॥३॥

चम्पा-प्यारी ! घा, बीजत, ऐश्वर्य ता खूब है न ?

माहिनी—इसका लकर क्या हम चाते ? सुनो ।

माधन—"ऐ, वय सुन ल क्या करे, बालक पति-पति सुन रही ।

वगैर आ मडार वह पाँचे जा जा सुन तब रही । ॥४॥

(जोर न रोना, गेत २ कहता)

एत सुना मे मृत्यु के प्रभु हा रुपा तग अधिक ।

नकमे जायन जिनाही, हाय ! हमसे हाय धिक् ॥५॥"

(रुदा)

प्यारी सखिया ! मैंने आज पहिले पहिल तुम न अपना
यह दुख कहा कही है । और १ रिना अन्य न हा कडा
का नम्रार है मुक्त पर अनुग्रह करना । गुत रखा यथा
माय्य निगमा ।

सम्पा—मैं तो भा ता अपना दुख तुम से ही कहकर हलका किया
है, रिना का बात बोल नहे, मर हा एक ली है ।

चमत्ता—सखिया ! मैं क्या का इस बात पर विचार कर रही
हूँ कि बिचि का विराग तो देना, कि हम सय एर हा
ब्राग और माहिले में पैदा हुए । एर साथ ही जेना हूँ
पढा लिगी । विराह भा करीब २ नाथ ही हुआ । इनर

पञ्चात् सान्निधिक दुख दुख ली लवण समा १ हा रहा ।

अब पति सम्पत्ति सुन दुख सा तीना ही का बराबर है ।

सम्पा—और यह बराबरी १ जाने कब तक मान देगा ?

हे इश्वर ! तग लीला अपरवार है । नेग इच्छा !

माहिता—प्यारियो ! इसमें इश्वर क्या करे ? उनका भर्त्ता को
धुद्धि दी है, चरका माधने समझा का सागमार विचार
शक्ति गवान का है । हम उसका कुचयोग कर रहे हैं ।

नेत्रों में फँसी अज्ञानता, रुद्धिगर्त जर्मनियों का गताशोक
- विषय में पुण्या की उदात्ताता उपेक्षा, माता पिता का
लापसी आदर ये हा नय हमें त्रास में भोंरती हैं।
काह उक्त था। व प्रतिकार का प्रयत्न नहीं करता। इस
विषय में स्त्रियों जगती माताओं का दृष्टान्त और भा
गवत्तु है। इससे दयालु और ग्राह्य है। उस का
कृत्तु भा दाय नहीं। यह सब हमारे पालन और समान
का दोष है।

चर्या—मन्य है बाह्य सत्य है। इससे सब का सुखी पदार्थ
करे।

माहिती—आशा चाहते हैं। आज में तुमसे अस्मात् मिल रहा।
पश्यतु हूँ। मेरा यह अन्तिम इच्छा भा पुण्य है। आशा
परदार और ताँगे मिल ल, न जाने फिर मिलना कब हो
या न हो। प्रभु में श्रद्धा जाया में विजयल ही विराज
ते चुकी हैं। मेरा निश्चय आज केवल हो रहा है। ऐसी
विश्रान्ति में आता हूँ। आज में हाँ दा तान उदारायें यथायथ
ऐसा भा गती हैं नि। आज में श्रद्धा मुझ विन्नी का ताँगे
विश्रान्ति में, आज में प्रशासन ज्ञान से हूँ मैं मयाग
मल्ल लता का भा हूँ है, इस कारण मैं इससे सब उदारा
आता गता (यात काटकर) आशा! आशा! पर
बार और मिल गे।

(दोनों बाहों का आश्रय से आता कुछ बोलते आशा—
इससे पहिल ही माहिती का दोहरे मत निश्चय जाता दागों

नरकल इन्क पहिले हा पाँले रग काँ एक नरकल गदार्थ की
डाटा शाशा मिकाल उन्नकी दाचार वृद्ध पाँना कुल्लु दूरमें वेसुन
गना)

दानी—(घबड़ाकर हाथ पकड़) अगे पगली ! यह क्या आर्य
किया ! अन्त में तरा यह दशा ! हाय ! भगवान ! (रोना
का गाना) -

मोहिनी—[उत्सुव दशा में] बस, अब बस ! नरक में नाच ॥
इस आकस्मिक-मृत्यु का मन्वार में मुक्ति ! हे इश्वर ! अपना
एक अवधि पुत्री की हार्दिक कर्मजारी की क्षमा करना ।
प्यारे पति ! हमारे प्राणाधार ! प्यारी सन्धियाँ [माता,
पिता, नाम, असुर, सब ही परिजन मुझे हृदय से क्षमा
दो । इश्वर ! आप जानते हैं कि मैं हृदय से निर्दोष हूँ ।
परमा पिता ! आप तो अदृश्य ही क्षमा करते ऐसी आशा
है । प्यारी सन्धियाँ ! यह देश व नेताओं, पञ्चा से बँ गढ़
अपीलाका पत्र उन्न तक [कहते कहते गिरता] नेहाशी
बढ़ता—गला सूजना—पाँनी , (हिचकी)

घण्टा—प्यारी चमेती ! मालूम होता है कि इनने उन्न विष का
पात्र किया है । क्या करें ! हम दोनों मोहिनी से विलंबात
में सुखा हैं यह शाशा हमारे भी दुःखा का अन्त करने के
लिए हमारा भी आवाहन कर रहा है । एक न एक दिग
अपन जो भी इसा मार्ग का पथिक बनता गड़ेगा । तो
आज हा यह स्वयंयाग क्यों जागे दें । प्यारी सन्धि का
साथ क्या ड्राइ ? (शीशी उठाना-)

चमेली—(रोकर) बहिन ! मरने ही म क्या होमा ?
 चमेली—[गर्वसे] अगल गमला गता है । त्रि, मगल स निरु-
 शांति मिलेगा । नेताओं और युवकों में कुंतीति विधायी
 और सुधार करने अग्रजों और कम्यारों दशा सुग-
 र्ग का काँच पड़ेगी । कुंतीति देवा की बलि देता पर पवित्र
 युवक—युवनियों का बलिदान ही फल देता है व्यथ नहीं
 जाता । (माहिनाथ पत्रको पढ़ कुट्ट ठीककर सही करना)
 तग हूँदा, मैं ना जाता । [वह हाथ छुड़ा शीर्षा का पदार्थ
 पान करता—हे दश्वर ! भूमी भटका पुत्र का क्षमा]
 (बेमोश हो ग)

चमेली—हाथ माग में गी क्या न चलू । पीछे क्या रहूँ । [पत्र
 पर हस्ताक्षर कर पदार्थ पान करता, दाँते का क्षण भरमें
 बहाल जाता] [आपमान]

(एक तीसरा दृश्य तीसरा पूर्ण)

मोहन-मोहिनी.

एक तीसरा-दृश्य चौथा ।

एगल-जाँघपुर, सठ माघश्रमार्द का जगाग बमरा मोहन
 का शय्या पर पड़ा है । पास में माघय, माजतो सुरंगनरुद्र
 पठक सुरंगलमार्ग पहनवान, सुरंगिताल आदि घेरे
 हैं । सबों के मुख उदात्त हो रहे हैं ।

मोहन—(भ्रम में) हेतु ! सींग शरीर और विर में रक्षकदा

नम्रहृद इसके पहिले ही गाले रंग की एक नरल गदार्थ की
छाटी शाशा निकाल उसकी दाचार बूँद पाँगा कुछ देर में विसृज
हाना)

होना—(घबड़ाकर हाथ पकड़) अग गमली ! यह क्या अर्थ
किया ! अन्त में तेरा यह दशा ! हाय ! गगवान ! (होना
का गाना) -

मोहिनी—[विसृज दशा में] वन, अब वन ! नर्क से नाग !
इस साकमय-युता समार न मुक्ति ! हे इश्वर ! अपना
एक शवाध पुत्रा की हार्दिक कमजोरी की क्षमा करना ।
'प्यारे पति ! हमारे प्रार्थार !' प्यारी सखियों ! माता,
पिता, लाल-मसुर, सब ही परिजन मुझे हृदय से क्षमा
दना । इश्वर ! आप जानते हैं कि मैं हृदय से गिरती हूँ ।
परम पिता ! आप ना अरुण्य ही क्षमा करने ऐसा आशा
है । प्यारी सखिया ! यह देश के नेताओं, पञ्चा से की गई
अपीलका पत्र उन तक [कहते रहते गिरती] नेहाशी
बढ़ना-गला सूझना-पा गी, (हिचकी)

धरना-प्यारी समेती ! मालूम होता है कि हमने उल्ल विष का
गान किया है । क्या करें ! हम दोनों मोहिनी से विषबात
में सुर्षा हैं यह शाशा हमारे भी दुःख का अंत करने के
लिए हमारा भा आवाहन कर रहा है । एक न एक दिन
अपने ही भी इस मार्ग का अधिक बनना पड़ेगा । तो
आज ही यह स्वयंसेवक क्यों जा दें । प्यारी सखि का
साथ क्या छोड़ें ! (शीशी उठाना-)

चमेली—(रोकर) यही ! मर ही मैं क्या होगा ? ।

चमेली—[गर्वसे] अगर पगली मरता है । तब मरने से निश्चय
शांति मिलेगी । नन्दाशौ और युवकों में कुंगीति निवारण
और सुधार कर अवलोकन और कन्याओं की दशा सुग-
म का साज पड़ेगी । कुंगीति-देवा की बलि देना पर पवित्र
युवक—युवनियों का बलिदान ही फल देना है व्यर्थ नहीं
जाना । (मोहिनी पर पड़ कुट्ट ठोककर मारी करता)
मर डूबा, मैं तो चला । [कुछ हाथ लुटा शीशी का पदार्थ
पाग करता—हे ईश्वर ! भूमी गदग पुत्रों का क्षण]
(बेमौल हा हा)

चमेली—हाथ साज में सी फंसा चला । पीछे क्या रहूँ । [पत्र
पर हस्ताक्षर कर पदार्थ पाग करता, दागों का क्षण भरों
बहाल जाना] [द्वापलीन]

(संक तीसरा दृश्य तीसरा पूर्ण)

मोहन-मोहिनी.

संक तीसरा—दृश्य चौथा ।

मोहन—आंधपुर, सठ माधनगसाद का जगता कमरा मोहन
का शय्या पर पड़ा है । पास में माधन, मालती, सुरेशचन्द्र
पण्डित, सुशीलमन पहलवान, सुमतिमान आदि बैठे
हैं । सबों के मुख उदात्त हो रहे हैं ।

मोहन—(धड़कते) हाथ ! सींग शरीर और चिर में दृढ़

है । गली सूख रहा है । जगान खिनी जा रहा है । 'गंगा' ।

सठ माधव० [पाना पिलाकर] माहगे । प्यार माहगा । सज्जा
बड़े साहस तुम्ह देव गये हैं, मयगया मत ।

माहगे-[चेहाणा की हातत म] क्या कहा ? कीत आया ?

करा माहिता आगई ' कहाँ है । प्यारी चलो ' क्या तू मा

साध चलागता कहता है ? यदि चलाता हा ता जल्दा कर ।

आ प्यारी ! आ ॥

सठ माधव०-घेडा । [शगर पर हाथ फेंकर] लोको जगपुर

आदमी भेजा है । शास्त्र ही आने वाली है ।

सुरेशचन्द्र पाठक-सठ साहेब । अब मोहनी की नयित वैनी हे ?

सज्जा साहेब । युतागता आप बहुत थे क्या घेठल गये ?

सठ माधव०-तबियत का दशा तो आप दख ही रहे हैं नज्ज

लाहेर भी देख गये हैं । उनही राय म ता घटे आध्र धटे

का मोहगा, और है । जाने इश्वर मालिक है । (गाता)

सुरे० पाठक सठ साहेब धैर्य धारण करा । ज्ञान से काम ला ।

इश्वर सबका रक्षक है ।

सुशीलमन-आपने अपने कर्त्तव्य का पूर्ण पालन किया, खेद करना
व्यर्थ है ।

सठ माधव०-शगर मैं, अपने कर्त्तव्य का पूर्ण पालन करगता-

मेरा हादिक इन्सानुसार कार्य होना ता माहगा का यद

दशा नहीं जाना । मालती ! देख आ ! नाहन का वचन मैं

बिग्राह कराने और प्रगीत का शास्त्र हा मुह देना की

भूला-उसकी प्यारा दुआरा मां । 'दण्ड बाल विवाह का

। दुर्गगिरिनाम ' मन्त्र आह्वेय का बातें सुनीं या नहीं !

[मोहन की शाय सज्जन]

मालती-दुर्गु शा उत्तरा त उ ज़ोर से गगा ।

[गीत का प्रवेश]

गीत-सेठ आह्वेय ! जयपुर गया हुआ आदमी पत्र ले कर लौट आया है ।

मठ माधव-क्या उसक साथ दुलहिन नहीं आई ।

गीत नहीं ।

माधव- (चिन्तित हो) अचानक आ । पत्र ले आ । (गीत का पत्र लाकर देगा) पत्र पढ़कर बेराश होगी ।

सुरेशचन्द्र- (सेठ जी के मुँह पर मुद्राच जत छिड़कता हवा करता, डाका हाथ में आना) मठ आह्वेय, धैर्य धारण करो । पत्र पढ़न दा ऐना क्यों हुआ ।

सेठ जी-म र्ना के कहनाये तथा दठ में कैव दृढ़ रहता तो मेरा आज यह दशा न होती । (सर पाटता)

सुमनिलाल- (आश्चर्य से) पत्र में क्या है ?

सेठजी-[राकर] होगया उहा डकटहानी कोमल मल्लिका की सुन्दर कलिया पर भयाङ्क वज्र गत होगया और यहाँ मा मन्त्र के त के करणधुन के कमनाय कामल-पुसुम पर शास्त्र हो पाग जानता है । (रुक)

माधव-गामा आ । (पुनः ठहर कर) मुझे क्या आया है कि माहिना मेरे पहिल ही व्यंग में पहुँच गई और यह यहा से मुझे एक पत्र देना-पिटा रही है और अभी पास हुआ

रहा है। सोइ पत्र यदि आया हो तो मुझे देकर मेरा
आत्म इच्छा पूर्ण करा। लाथी।

माधव०—(हाँ पुत्र पत्र आया है पत्र दे) तो पुत्र पढ़ो, किन्हीं
पत्रों की इच्छा मन में न रखी।

माहन—(पिता ला । अब मुझे जंगल तलिये के सहारे बैठो दीजिये
इस समय मेरा निश्चय बहुत आनन्दित है। माता मैं बहुत
जल्दी अछड़ा हो जाऊँगा। अरे शरीर में यत्न और माहन
आता मालूम देता है। (तलिये के सहारे बैठना) अछड़ा
तो पत्र पढ़ो ? आप सब मा सुनते ? (पत्र ऊपर से पढ़ना)
(पिताप का संचार उलक जाश में)

पत्र की नकल।

मु० जयपुर।

ता० १-२-२५ ई०।

आयुत् मेठ साहेब माधवगसाह जी, जाधपुर की सेवा में।
माधव०।

सप्रम मादर अभिवादन। अगरश्रु समाचार यह है कि
आपने अपना मनुष्य पुत्र दे माहिमा का लिखा ले जाने के
दिनार्थ भेजा। किन्तु बड़े ही खेद के साथ लिखा पढ़ता है
कि मेरी प्यारी, दुबारी, आँखों की पुनर्जी माहि॥ परन्तु
सायनाल के समय दुर्घट काल का आगमन बन गई। हमें
विलंबते छाड़ चला गई। इसका मृत्यु बगीचे के आन्दर हुआ है
और आश्चर्य यह है कि उनकी दो घचपनकी साथी सहेलियाँ
जा हि दा चार दिन पहिले ही अपने २ ससुराल से। पापिस
आई थीं—य भी उसी हालत में आई गई हैं। तीनों परस्पर

गल्लवहियाँ डालते पड़ी थीं, मानों नी में साथ ही बही जा रही थीं। घटता आश्रय जान और मृत्यु का कारण अज्ञात है। पुलिस बड़ी सरगर्मी से तान कर रही है। जाग आकर मैं हूँ। यदि सरकार द्वारा आग में बाधा न पैदा तो हम दागा शास्त्र को कुंआर साहेब का देखना चाहेंगे जहाँ बाँसों का हाल यह चिन्ता बड़ा ही चञ्चल और व्यापक हो रहा है।

सुपर साहब का बामास का जन्म क्या - हाल है सूचित करें। पत्र लिख।

मोट - ताशा के पास ही एक पत्र मिला है जिसमें कि कुंआर पद्य का लक्षण लिखा है। उनके नीचे तीनों की सही है। वह भी भेजा जाता है। जम्मा है मृत्यु के साथ उन का सम्बन्ध हो। शायद आप उनका कुछ और भी महान् अर्थ निकाल सकें इन कारणों वह भी सवा में भेजा जाता है।

आवदाय - मारायणचन्द्र गुप्त।

सुग लिया। पत्र सबों में सुग लिया। अचट्टा और तानों की कविता भी सुनिये। गिता में पुर्जा दाजिये। (माधवप्रसाद का पुर्जा देगा) प्रथम में 'गढ़ फिर' (प्रकट) इमग तो ताग थोते हैं। १-युवकी का मन्दश, २-गैताशा से प्रिय, ३-अन्तिम प्रभु प्रायना। (रुन कर) छोड़ा गया पिताश्री - (माजता का गीत) पल्लव) माना भीने के बाद - जार स।

“युवकों को मूलो मन्देश”

“दश तीना अराध और निर्दोश युवतियों का एक साथ ही हुरीति प्रेमी का यत्नप्रदीप्त मन्निदान होते-दस अपन दश की दशा सुधार।”

“नेताओं से विनय”

(त्रिदोष कुपित होने के कारण गाकर जार से पटना)

* गायन *

मान्यवर नेता ! विनय सुनो, मान्यजन नेता विनय सुनो ॥१॥

महाराष्ट्र, पञ्जाबी, जैती, मान्धाड़ी, बंगाला । ।

गुनगोती कुछ अन्य प्रान्तक तज रहे व्यर्थ कुचाकी ॥

इहें लान करो, कार्य सुजनों । मान्यवर नेता ! विनय सुनो ॥२॥

बदला और देहेत प्रया पुनि बाल बृद्ध का व्याह ।

इगने मिल मय चौगट्ट कर दिया हावे कहीं निवाह ?

याग्य हो बात उसही चुना । मान्यवर नेता ! विनय सुनो ॥३॥

आर्य जाति की समुचित वन्नति, हात्रे और सुधार ।

इग वाता पै लक्ष्य दीजिये, हो, कुछ बेडा पार ॥

कदा यह करो न प्रिय असुनो ! मान्यवर नेता ! विनय सुनो ॥४॥

भाषा, भेष, भाव अरु होवे निज मत ही से प्रेम ।

भुले देना आत ना इगको निश्चय करते नेग ॥

इसका यत्न हृदय म गुनो । मान्यवर नेता ! विनय सुनो ॥५॥

मिटै अग्निद्या-रात्रि, सूर्य का हावे क्षान प्रकाश ।

हात्रे ‘लक्ष्मा’ तबही अपनी देशोन्नति की आश ॥

उरुचादश सवा के यनों, मान्यवर नेता ! विनय सुनो ॥६॥

अरे ! ये डा पानी पिताआ ! गला सूख रहा है । कुछ लारने और है । मार्यना है ।

मायग—“हे विगय कर जाइकर यगिता अर्थी की आप मे ।

सम्पत्त या पयस्य समभा, मरती कुराति ताप मे ॥१॥

मरती हुई का हृदयनि करना न प्यारा । अगसुगी ।

मेरुता कर यरा उरका हमसी यचें उम पाप स ॥२॥

हे प्रभो । जग क पिता । करना क्षमा कमजारिया ।

इस आत्महत्या पाप मे जो हम मरी सुकुमारिया ॥ ३॥

माहा—विनाज्ञा । खूब यकायद जाग पड़ता है । जरा ।

और पापी (पापी पा) हे राम । हे प्यारी माहिनी । तुझे

घन्य है जो मेरे पदिज दा मेर जागतार्थ स्वर्ग में पहुँच

बुझा । मैं तुझे यहाँ मन्तुष्ट न कर सका अन्तु अब यहाँ

आकर अरुण्य करूँगा । यहाँ यहाँ क समान कुरातियों का

लश भा नहीं है । पापी—पापी—पा (पापी पी) ओ

हा । तानों दश से कुरातियों का मिटाने क लिये, युवकों,

गताओं और देशवासियोंम प्राधान्य कर गई है—मर्मस्पर्शी

विाती सुना गई है कुराति दधी का यजियदी पर यजिदान

होगई है । मैं भी हाँ का तैयार हूँ । यदि आप सब उप-

स्थित सज्जन, हम चार प्राणिया का यजिदान देख, कुछ

शिखा प्रदण करें, देश मे कुरातियों के मेरुता का हृदय से

आश्वासन दें तो मैं सुख से प्राण विमर्जना करूँ और

हम चारों की आत्माओं को भी स्वर्ग में शान्ति मिले ।

पंडित सुरेशचन्द्र पाठक—[सब उपस्थित सज्जनों स सलाह

कर सबों का ओर से] गिय माहा । ‘हम सब ईश्वर

को साक्षी दे धर्मपूर्वक हृदय से प्रतिज्ञा करते हैं कि

"तुम सचा की शान्तिमें इच्छानुसार ही हम सब कुरी-
तियों का मूलोच्छेद करेंगे और तब, तब, धन स दश,
जाति और समाज की सचा करन क हेतु कटिबद्ध है।
आप हृदय में शान्ति धारण करिये।

माजती—(गहर) पुत्र में भी प्रतिष्ठा करती है कि आजही स
मेरे समाज सूत्रा, इठा माताओं, धदिनों का "बाल विवाह"
तथा अन्य कुंठातेया की हानियां बनला सचा को ऐसे
कार्यों स सदैव भोजनी रहूंगी।

मोहन—(पाणी पा प्रमत्त हा) बहून अच्छा। पिताजी, माता
जी गुरु मित्र, सम्बन्ध शादि सब ही क्षमा करिये।
(ईश्वर में प्रार्थना है कि हम बलिदान हो जायें सब पा-
त्रियों का यह शोध ही भोगत हा म पुत्र जन्म देवे ताकि
हम भी उसका सचा कर सकें। धन प्रणाम— ईश्वर
स व' वा स' दु' दु' दि द व।

('हरि ओम् नमो भगवते वासुदेवाय' 'ही प्रणाम')
[इतना ही में टेलीग्राम की आवाज सुनकर रुक कर बैठती हैं राज-
माता में ६० हजार की हानि का गढ़ वसुध हीना होश म
आने पर विस्मित होने का लक्षण दिखाई देता]

माजती—(गहर) हा। मेरी ही भुखंता दुःखग्रह का कारण
'बालविवाह' है। फल स्वरूप यह लागू होकर, [धीरे
धीरे पूर्ण] होकर ही होगा। हे प्रभु। रक्षा कर ॥

समस्त समाज (प्रणाम)

